क्रांतिलेख
स्वर्गीय इमाम खुमैनी का
दैविक-राजनीतिक
मृत्युलेख (वसीयतनाम)

आधुनिक युग के महान ऐतिहासिक पुरूष, इस्लामी क्रान्ति के लोकप्रिय नेता, इस्लामी गणतंत्र ईरान के संस्थापक तथा इस्लामी दुनिया के वरिष्ठ धार्मिक नेता स्वर्गीय हज़रत इमाम खुमैनी की मृत्यु के बाद ईरान के उच्चकोटि के धर्म विशेषज्ञों की परिषद (Council of Experts) का आपतकालीन अधिवेशन बुलाया गया जिसमें इस्लामी गणतंत्र के वरिष्ठ पदाधिकारियों के सामने स्वर्गीय हज़रत इमाम खुमैनी के वसीयतनामा की मोहर तोड़ी गयी और वसीयत के अनुसार ईरान के राष्ट्रपति हज़रत आयतुल्लाह खामुनेई ने उसको पढ़कर सुनाया जिसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। यह न केवल इमाम खुमैनी की अंतिम इच्छा व वसीयत होने की वजह से महत्वपूर्ण है बल्कि यह ऐसा महान "क्रान्तिलेख" है जिसको पढ़कर सम्पूर्ण इस्लामी क्रांति, उसके अस्तित्व व उद्देश्य, उसके मूल सिद्धान्त व आदर्श, उसकी सफलता व लोकप्रियता के कारणों, उसके महान परिणामों, उसके मित्रों तथा शत्रुओं की प्रतिक्रिया, दुश्मन के षड़यत्रों, रक्षा के उपायों तथा भविष्य में इसको सुरक्षित रखने वाले आदर्शों और उपायों का अनुमान लगाया जा सकता है। वास्तव में यह इस्लामी दुनिया के लिये इमाम खुमैनी का यह अन्तिम उपहार है जो हमारे आधुनिक तथा उत्तरकालिक जीवन के लिये एक आदर्श लेख के समान है। खुदावन्दे करीम हम लोगों को अपने स्वर्गीय नेता के मार्ग पर चलने की क्षमता प्रदान करे।

यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि स्वर्गीय इमाम खुमैनी ने यह वसीयतनामा अपनी मृत्यु से सात वर्ष पहले ही लिख दिया था जिसमें तीन वर्ष पूर्व कुछ संशोधन करके उसे दोबारा मोहरबंद करके सुरक्षित करा दिया था। यही कारण है कि अलंकारिक भाषा के प्रयोग के बजाय इस वसीयत नामे का पदानुपद अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। ताकि पाठकों को इस महान नेता के वास्तविक विचारों से अवगत कराया जा सके।

بسم الله الرحمن الرحیم

قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم "انی تارک فیکم الثقلین
کتاب اللہ وعترتی اهل بیتی فانهما لن یفترقا حتی یردا علی الحوض"
الحمد لله وسبحانک اللهم صل علی محمد وآله مظاهر جمالک
وجلالک وخزائن اسرار کتابک الذی تجلی فیه الاحدیة بجمیع اسمائک
حتی المستاثر منها الذی لا یعلمه غیرک واللعن علی ظالمیهم اصل الشجرة
الخبیثة وبعد.

और अब मैं यह उचित समझता हूँ कि हदीसे सकलैन के बारे में कुछ संक्षिप्त वर्णन करूँ। वैसे तो इसकी दैविक वास्तविक तथा ब्रह्मज्ञानी महत्वता का वर्णन नही किया जा सकता है क्योंकि यह मेरी लेखन शक्ति से बाहर है और इसकी महत्वता केवल इस दुनियाँ तक ही नहीं बल्कि आकाश तथा अध्यात्मिक संसार तक फैली हुई है। और यह हमारी और आप लोगों की समझ में न आ सकेगा। अगर हम इसको असम्भव न कहें तो कठिन और सहनशक्ति से बाहर अवश्य है। और यह सम्पूर्ण महान के अलावा हर चीज़ से ज्यादा महान है। इस जगह उन हकीकतों की तरफ संकेत करने की इच्छा नहीं है जो इस हदीस की महानता को न समझने की वजह से मानव-जगत के सामने आती रही है और न उन चीजों को बयान करने की इच्छा है जो इन दोनों महान चीजों के विरूद्ध ईश्वर-दुश्मन गिरोहों के द्वारा किया जाता रहा है। सीमित समय तथा ज्ञान की कमी के कारण इस पूर्ण विवरण असम्भव है। अतः मैंने यह उचित समझा कि जो कुछ इन दो "मूल्यवान" चीजों पर बीती है उनकी तरफ संक्षिप्त और हल्का सा इशारा कर दूँ।

सम्भवतः " لن یفترقا حتی یردا علی الحوض " के माध्यम से इस बात की तरफ इशारा किया गया हो कि रसूल मकबूल (स॰) के देहान्त के बाद जो कुछ भी इन दोनों में से किसी एक पर बीती है वह दूसरे पर भी बीती है। इनमें से एक की मुसीबत व तन्हाई दूसरे की मुसीबत व तन्हाई है। यहाँ तक कि यह दोनों दुखी "हौज़" के निकट पैगम्बर से मुलाकात करें। आखिर इस हौज़ का अर्थ क्या है? क्या यह वहदत (एकता) से अनेकता के मिलाप का स्थान है? और समुद्र से पानी की बूँदों के मेलमिलाप की जगह है। या कोई ऐसी चीज़ है जहाँ तक मानव बुद्धि नहीं पहुंच सकती है?

इतना अवश्य कहना चाहिये कि पैगम्बर (स॰) की इन दो अमानतों पर शैतानी ताकतों ने जो अत्याचार किये हैं वह वास्तव में केवल मुसलमान जनता पर ही नहीं बल्कि मानव जगत पर ऐसा घोर अत्याचार है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इस मौके पर यह बता देना उचित मालूम होता है कि हदीसे सकलैन सभी मुसलमानों में प्रचलित है और सुन्नी मुसलमानों की सात महत्वपूर्ण पुस्तकों तथा अन्य दूसरी धार्मिक पुस्तकों में अनेकों स्थान पर शब्दों के आंशिक अन्तर के साथ मौजूद है

और दुनियाँ के तमाम मुसलमानों की नजर में एक सच्ची हदीस है। इससे साफ मालूम हो जाता है कि जिन लोगों को इस हदीस की वास्तविकता का ज्ञान हो गया है उन्हें इसके प्रति उत्तरदायी होना है। यदि अनपढ़ लोगों की यह बात मान भी ली जाय कि उन्हें वास्तविकता का का ज्ञान नहीं था। आइये ध्यानपूर्वक देखा जाय कि पैगम्बर की मूल्यवान विरासत तथा धार्मिक पुस्तक कुर्आन के साथ क्या व्यवहार किया गया। खून के आँसू रूलाने वाली दुखद घटनाओं की शुरूआत हज़रत अली (अलैहिस्सलाम) की शहादत के बाद हुई। स्वार्थी एवं अत्याचारी शक्तियों ने कुर्आन को कुर्आन से बैर रखने वाली हुकूमतों के बचाने का ज़रीया बना दिया। और कुर्आन का वास्तविक ज्ञान रखने वाले महान पुरूषों की तनिक परवाह न की हालांकि इन लोगों ने कुर्आन को पैगम्बर से प्राप्त किया था और इनके कान में पैगम्बर की इस हदीस की आवाज आज भी गूँज रही थी। फिर भी षडयंत्रों का जाल फैलाकर इन कुर्आन ज्ञानी महान पुरूषों सामने नहीं आने दिया गया। बल्कि यह कहना अधिक उचित प्रतीत होता है कि कुर्आन के द्वारा ही कुर्आन को मैदान से हटा दिया गया जबकि यह धार्मिक पुस्तक मनुष्य के भौतिक एवं नैतिक जीवन के नेतृत्व के लिये आयी थी। वास्तव में न्यायपूर्ण समाज का गठन इस महान धार्मिक ग्रंथ का एक परमलक्ष्य था और है लेकिन इस लक्ष्य को भुला दिया गया। इलाही पुस्तक से मुँह मोड़ लेने की बुनियाद डाल दी गयी और मुआमला इस हद तक पहुँच गया कि उसका वर्णन करते हुये कलम को शर्म आती है और यह टेढ़ी आधारशीला जैसे जैसे आगे बढ़ी इसके टेढ़ेपन में वृद्धि होती चली गयी यहाँ तक कि वह कुर्आन करीम, जो पूरी दुनिया की प्रगति तथा नेतृत्वता के लिये उतारा गया और जिसका मकसद मनुष्यता को शैतानी शक्तियों से बचाना था और जो दुनिया में हर जगह सच्चाई और न्याय को बोलबाला स्थापित करने के लिये आयी थी और हुकूमत मासूम औलिया अल्लाह के सुपुर्द करना चाहती थी ताकि वे लोग मनुष्यता के हितों को ध्यान में रखते हुये हुकूमत की बागडोर जिसके सुपुर्द करना चाहें कर दें लेकिन इन शैतानी ताकतों ने इस महान धार्मिक पुस्तक (कुर्आन) को मैदान अमल (कर्मभूमि) से इस तरह दूर कर दिया जैसे की दुनिया की हिदायत व रहनुमाई से इसका कोई सम्बन्ध ही नहीं है और यह बात यहाँ तक पहुँच गयी कि कुर्आन को अत्याचारी तथा शैतानी हुकूमतों से भी ज्यादा खराब मुल्लाओं के सुपुर्द कर दिया गया और इन लोगों ने इस किताब के सहारे अत्याचारी हुकूमतों के कुकर्मों पर परदा डालने का काम शुरू कर दिया। फलस्वरूप षडयंत्रकारी शत्रुओं तथा अनपढ़ मित्रों के द्वारा इस महान पुस्तक को मृतकों की शोक सभाओं तथा कब्रिस्तानों तक ही सीमित कर दिया गया और आज भी इसका यही हाल है। जिस किताब को मुसलमानों तथा मनुष्यों के बीच एकता का ज़रीया होना चाहिये था वह मतभेद तथा अलगाव पैदा करने का जरीया बन गयी या फिर कर्मक्षेत्र से बिल्कुल अलग कर दी गयी। जिसका परिणाम हमारी आँखों के समने है कि यदि कोई मनुष्य इस्लामी हुकूमत की बात भी करता था और राजनीति जो इस्लाम तथा पैगंबरे-इस्लाम (अ) की मुख्य भूमिका रही है तथा जिसका वर्णन कुर्आन और सुन्नत में भली-भांति मौजूद है, अगर कोई आदमी अपनी जुबान से इसका नाम भी लेता था तो उसको महापापी के नाम से याद किया जाता था और यह समझा जाता था कि राजनीति की बात करने वाला घोर पापी है। केवल इतना ही

नहीं बल्कि "राजनीतिक मौलवी" नामी शब्द "अधर्मी मौलवी" के समान हो गया था और आज भी यही दशा है। आजकल दुनिया की महा-शैतानी शक्तियाँ इस्लामी शिक्षाओं से दूर और स्वयं को इस्लामी हुकूमत कहने वाली तथा महाशक्तियों के शैतानी लक्ष्यों को पूरा करने वाली हुकूमतें कुर्आन को मिटाने के लिए इस महान-पुस्तक को सुन्दर तथा मनमोहक डिज़ाइनों में प्रकाशित करके दुनियाँ के कोने-कोने में भेज रही हैं और इस शैतानी-षड़यंत्र की आड़ में कुरआन को कर्मभूमि से निकाल बाहर कर रही है। हम सब ने उस कुरऑन को देखा है जिसको मुहम्मद रज़ा खान पहलवी ने प्रकाशित किया था और जिसके द्वारा उसने कुछ लोगों को अपने जाल में फाँस भी लिया था। फलस्वरूप इस्लामी लक्ष्यों से बेख़बर कुछ मुल्ला उसकी प्रशंसा भी करने लगे थे और हम देख रहे हैं कि सऊदी शासक फ़हद हर साल जनता की बेपनाह दौलत से एक भारी रक़म कुरआने-करीम छापने तथा कुरआन दुश्मन-धर्मों के प्रचार पर खर्च कर रहा है तथा पूर्णरूप से आधार-रहित वहाबी धर्म को फैलाने की कोशिश कर रहा है। और अनजान लोगों को बड़ी-ताकतों की गुलामी की तरफ मोड़ रहा है तथा कुरआन और इस्लाम धर्म को मिटाने के लिए इस्लाम और कुरआन का अवैध प्रयोग कर रहा है।

हमें और इस्लाम व कुरआन की वफादार कौम को गर्व है कि वो उस धर्म की अनुयायी है जो केवल तमाम मुसलमानों में ही नहीं बल्कि तमाम इंसानों के बीच एकता के संदेश से भरे हुए कुरआनी-तथ्यों को क्रिस्तानों से मुक्ति दिलाकर इसे एक ऐसे महान मुक्ति-लेख के रूप में पेश करना चाहता है जो मानव को उन तमाम बंधनों तथा जंजीरों से आज़ादी दिला सकता है जिनमें उनके हृदय उनकी सूझबूझ तथा उनके हाथ पैर जकड़े हुए हैं और उसे सर्वनाश तथा शैतानी ताकतों की गुलामी की तरफ खींच रही हैं।

हमें गर्व है कि हम उस मज़हब के मानने वाले हैं जिसकी बुनियाद ईश्वर के हुकम से पैंगबरे-खुदा ने रखी है और इन्सान को गुलामी के बंधनों से मुक्ति दिलाने की ज़िम्मेदारी हर प्रकार की उदासता से आज़ाद बन्द-ए-खुदा अमीरूल-मोमिनीन हज़रते अली इब्ने अबी तालिब (अलै) को सौंपी गई है। हमें गर्व है कि 'नहजुल-बलाग़ा,' कुरआन के बाद मनुष्य की भौतिक एवं अध्यात्मिक जीवन की महान नियमावली और मनुष्यों को मुक्ति दिलाने वाली महत्वपूर्ण किताब है और उसके शासकीय तथा आध्यात्मिक आदेश मुक्ति के सर्वोत्तम साधन हैं और यह महान पुस्तक हमारे मासूम इमाम से संबंध रखती है। हमें गर्व है कि आइम्मा-ए- मासूमीन-अली-इब्ने-अबीतालिब (अलै) से लेकर हज़रते महदी तक, जो खुदा बंदे करीम की कुदरत से जीवित और तमाम गतिविधियों के निरीक्षक हैं, हमारे इमाम हैं। हमें गर्व है कि जीवन प्रदान करने वाली दुआएँ जिन्हें "कुरआन-ए-साएद" के नाम से याद किया जाता है, हमारे अइम्मा-ए- मासूमीन (अलै) की सिखाई हुई हैं। हमें गर्व है कि अइम्मा (अलै) की मुनाजात-ए-शाबानिया हुसैन इब्ने अली (अलै) की दुआ-ए-अरफ़ात, ज़ुबूर आले मुहम्मद (अलै) सहीफा-ए-सज्जादिया और हज़रते फातिमा पर खुदा की तरफ से उतारी गयी किताब सहीफा-ए-फातिमिया हमसे संबंध रखती है। हमें गर्व है कि बाक़िरूल-उलम हज़रत इमाम मोहम्मद बाकर (अलै) जो इतिहास में सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व के मालिक हैं

और जिनके व्यक्तित्व की महानता को खुदा उसके रसूल (सल॰) और अइम्मा-ए-मासूमीन (अलै॰) के अलावा कोई नहीं समझ सका है और न ही समझ सकता है, हमारे हैं। हमें गर्व है कि हमारा धर्म जाफरी है और हमारी फिक्ह जो अथाह समुद्र है इस धर्म के महान चिन्हों में से एक है। हमें अपने सभी मासूम इमामों पर गर्व है और हम उनकी आज्ञापालन के लिए वचनवद्ध हैं।

हमें गर्व है कि हमारे आइम्मा-ए-मासूमीन (अलै॰) ने इस्लाम धर्म की कीर्ति तथा कुरआने-करीम को-जिसका एक पहलू न्याय पर आधारित हुकूमत का गठन है-वास्तविक रूप देने की राह में कैद और बहिष्कार का जीवन व्यतीत किया और अन्त में अपने समय की अत्याचारी तथा शैतानी हुकूमतों को सर्वनाश करने की राह में शहीद हो गए। और आज हमें गर्व है कि हम कुरआन व सुन्नत के उद्देश्यों को पूरा करना चाहते हैं और हमारी कौम के सभी लोग इस महान-कार्य में अपने जानो माल की परवाह किए वग़ैर खुदा की बारगाह में अपने सगे-संबंधियों की कुरबानी पेश कर रहे हैं। हमें गर्व है कि हमारी औरतें चाहे वो बूढ़ी हो या जवान, छोटी हों या बड़ी सब की सब सैनिक, आर्थिक तथा सौंस्कृतिक क्षेत्र में पूरी तरह उपस्थित हैं। और पुरूषों के साथ मिलकर या उनसे ज्यादा अच्छे ढंग से कुरआने करीम के लक्ष्यों को पूरा करने तथा इस्लाम के झंडे को ऊँचा उठाए रखने में पूर्णरूप से संलग्न हैं। जिन महिलाओं में युद्ध करने की क्षमता है इस्लाम तथा इस्लामी राष्ट्र की रक्षा के लिए सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त करने में लगी हैं। और दुश्मनों के षडयंत्र तथा इस्लाम व कुरआन के आदेशों की तरफ से दोस्तों की लापरवाही के परिणामस्वरूप केवल उन पर ही नहीं बल्कि इस्लाम और मुसलमानों पर जो परेशानियाँ लाद दी गयी थीं उनसे बड़ी वीरता के साथ मुक्ति प्राप्त कर ली है। तथा बुराइयों के उस घेरे से बाहर निकल आयी हैं जिसको दुश्मनों ने अपने फायदे के लिये बनाया था। इसके अलावा जिन महिलाओं में युद्ध करने की क्षमता नहीं है वह रणभूमि से दूर कीमती सेवा में लगी हुयी हैं और देशवासियों के दिल में देश सेवा और धर्मरक्षा की भावना जगा रही हैं तथा अपने जोशीले बयान से शत्रुओं के हौसले पस्त कर देती हैं। हमने बार-बार देखा है कि हज़रत ज़ैनब के आदर्शों का पालन करने वाली महान महिलायें यह घोषित कर रही हैं कि ईश्वर और इस्लाम की राह में हम अपने सुपुत्रों की कुर्बानी दे चुके हैं और अपना सब कुछ लुटा चुके हैं और हमको अपनी इस कुर्बानी पर गर्व है और हम लोगों को पता है कि इस बलिदान के बदले में हमने जो कुछ प्राप्त किया है वह स्वर्ग से भी अधिक मूल्यवान है फिर इसके सामने इस दुनिया की मूल्यवान वस्तुओं की क्या हैसियत है।

हमारे राष्ट्र बल्कि सभी इस्लामी राष्ट्रों तथा संसार के निर्बल लोगों को गर्व है कि उनके दुश्मन खुदा के दुश्मन हैं। वास्तव में वह ऐसे भयंकर निर्दयी तथा जंगली है कि अपने उद्देश्य को हासिल करने के लिये वह घोर अन्याय और अत्याचार करने में लज्जा नहीं महसूस करते तथा अपनी इच्छाओं की प्राप्ति और सत्ता हासिल करने की राह में दोस्त दुश्मन के बीच किसी प्रकार का अंतर नहीं रखते और इन दुश्मनों का मुखिया अमरीका है जिसके रोम रोम में आतंकवाद भरा हुआ है। वास्तव में अमरीकी

शासन ने पूरी दुनिया में आग लगा रखी है। और इसके साथ वह अत्याचारी इस्राइली हुकूमत भी लगी हुई है जो अपनी लालचपूर्ण इच्छाओं की पूर्ति के लिए ऐसे भयंकर अपराध कर चुकी है जिसका वर्णन करते हुए भी लज्जा आती है। "महान इस्राइल" का मूर्खतापूर्ण विचार इसे हर प्रकार के अपराध व अत्याचार की ओर आमंत्रित कर देता है।

इस्लामी राष्ट्रों तथा संसार के निर्बल लोगों को गर्व है कि उनके शत्रु की सूची में फेरी लगाने वाला अत्याचारी जार्डन का शाह हुसैन तथा अत्याचारी इस्राइल के साथ गठजोड़ करने वाले हसन व हुसनी मुबारक हैं जो अमरीका व इस्राइल की सेवा की राह में अपने देशवासियों के साथ हर तरह की गद्दारी पर तुले हुए हैं। हमें गर्व है कि हमारा दुश्मन अफलकी सद्दाम है जिसको दोस्त व दुश्मन सभी एक अपराधी अत्याचारी और अंतरराष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन करने वाला तथा मानव अधिकारों का दुश्मन समझते हैं। सब जानते हैं कि अत्याचार के बोझ से दबी हुई ईराकी जनता तथा खाड़ी के राष्ट्रों के साथ इसकी गद्दारी ईरानियों के साथ की गई गद्दारियों से कुछ कम नहीं है।

हमें और दुनियाँ की मज़लूम जनता को गर्व है कि अंतर्राष्ट्रीय प्रोपगंडा मशीने तथा सार्वजनिक संचार के सभी साधन हम पर और दुनियाँ के सभी मजलूम पर हर उस अपराध का इल्ज़ाम लगाते हैं जिसका उन्हें अपराधी महाशक्तियों की तरफ से आदेश मिलता है। इससे बढ़कर गर्व की बात और क्या होगी कि अमरीका युद्ध संयत्रों से मालामाल तथा संसार की निर्बल जनता की असीम दौलत पर अनाधिकृत कब्ज़ा जमाए रहने तथा संसार के सार्वजनिक संचार साधनों पर हावी होने के बावजूद हज़रत इमाम मेंहदी के देश तथा निष्ठावान ईरानी जनता के मुकाबले में इतना लज्जित हो चुका है कि उसकी समझ में नहीं आता कि अब किसको सहारा बनाए। वह जिसकी तरफ देखता है नकारात्मक उत्तर मिलता है। और यह सब कुछ ईश्वर की असीम कृपा और दैवी सहायता के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यह ईश्वर की महान कृपा ही तो है कि उसने इस्लामी ईरान की जनता को जागृत करके तानाशाही के अंधकार से निकालकर इस्लामी प्रकाश की तरफ आमंत्रित कर दिया है। मैं अब संसार की भद्र जनता तथा ईरान के लोगों से यह वसीयत करता हूँ कि वो पूर्ण निश्चय तथा सुदृढ़ता के साथ इस दैवी मार्ग पर डटे रहें जो न नास्तिक पूरब से संबंधित है और न काफ़िर व अत्याचारी पश्चिम पर आश्रित है, बल्कि वह सीधा मार्ग है जिसे ईश्वर ने उन्हें प्रदान किया है। अतः एक क्षण के लिए भी उसके प्रति आभार प्रकट करने में लापरवाही से काम न लें विदेशी एजेण्ट हों या महाशक्तियों के एजेण्टों के अपवित्र हाथ- चाहे विदेशी एजेंण्ट हों या आंतरिक एजेण्ट- उनके पवित्र निश्चय तथा मज़बूत इरादों में कोई रूकावट पैदा न करने पाएँ और अच्छी तरह समझ ले कि संसार के जन-संचार तथा पूरब और पश्चिम की महाशक्तियाँ जितनी डींग मार रही हैं वह इनकी दैवी शक्ति का प्रमाण है और ईश्वर इन अपराधियों को इस दुनियाँ तथा दूसरी दुनियाँ में भी कड़ी सज़ा देगा। (انه ولی النعم و بیده ملکوت کل شی-)

मैं पूरी विनम्रता के साथ दुनिया के मुसलमानों से यह प्रार्थना करता हूं कि अइम्मा-ए-अतहार (अलै॰) और मानव संसार के इन नेताओं की सैनिक, आर्थिक, समाजिक और राजनैतिक संस्कृति का पालन करें चाहे इसके लिए उन्हें अपनी संतान तथा अपने सगे-संबंधियों का बलिदान ही क्यों न देना पड़े। इसके साथ ही साथ मौजूदा फ़िक्ह एक रवायती फिकह है जो दबिस्ताने रिसालतो-इमामत की प्रतिनिधि और कौमों की महानता और प्रगति की ज़मानतदार है चाहे वह उसके प्रथम आदेश हों या द्वितीय आदेश क्योंकि इन दोनों का इस्लामी फिकह के स्कूल से गहरा संबंध है। मुसलमान इससे तनिक भी दूर न हों और न्याय तथा धर्म के दुश्मनों के गंदे विचारों को न सुने और ये जान ले कि इस फिक्ह से एक कदम दूर हटना भी धर्म, इस्लामी आदेश और दैवी व न्यायपूर्ण हुकूमत के पतन की प्रस्तावना इसके साथ ही साथ नमाज़-ए- जुमा व जमात-जो नमाज़ के राजनैतिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती है। इसकी तरफ से हरगिज़ लापरवाही न करें क्योंकि यह नमाज़े जुमा इस्लामी गणतंत्र ईरान पर ईश्वर की महान कृपाओं में से एक है। इसके साथ ही साथ अइम्मा-ए-मासूमीन (अलै॰) विशेष रूप से शहीदों के सरदार हज़रत अबी अब्दुल्लाहिल हुसैन की अज़ादारी है अतः इस आज़ादारी की तरफ से कभी भी लापरवाह न हों और याद रखें कि इस्लाम की इस महान एतिहासिक घटना को जिन्दा रखने और इसकी याद मनाने के संबंध में अइम्मा (अलै॰) के जितने भी आदेश हैं और पैगंबर के अहले-बैत पर अत्याचार करने वालों के संबंध में जितनी भी निन्दा है यह सब कुछ मानव इतिहास की शुरूआत से लेकर कयामत तक के अत्याचारियों और अत्याचारी गिरोह के मुखियाओं के विरूध लोगों की वीरतापूर्ण आवाज़-ओ-फरियाद है। आप जानते हैं कि बनी-उमैया के अत्याचार के खिलाफ आवाज़ और उनकी निन्दा वास्तव में दुनिया के अत्याचारियों के खिलाफ आवाज़ है और इसके साथ ही साथ अत्याचार को समाप्त करने वाली आवाज़ को जीवित रखने का माध्यम भी है। अतः आवश्यक है अइम्मा-ए-मासूमीन (अलै॰) के नौहों, मरसियों और प्रशंसा से भरपूर क़सीदों में हर जगह और हर युग के अत्याचारियों के अत्याचार तथा उनके दुखद अपराधों का प्रभावपूर्ण वर्णन किया जाय। हमारा यह युग वास्तव में अमरीका रूस और उनके सभी एजेण्टों

(لعنت الله وملائكته ورسله عليهم)

तथा हरम-ए-अमन-ए-इलाही से गद्दारी करने वाले सऊदी शासकों के द्वारा इस्लामी दुनियाँ की मज़लूमियत का युग है। अतः इनके अत्याचारों का भली-भाँति वर्णन किया जाय और उनकी भरपूर निन्दा की जाय। हम लोगों को यह जान लेना चाहिए कि वह चीज़ जो मुसलमानों के बीच एकता का साधन है वह यही- राजनीतिक समारोह हैं जो तमाम मुसलमानों विशेषतया बारह-इमामों के मानने वाले शीयों की कौमियत की रक्षक हैं। यहाँ यह याद दिलाना भी जरूरी है कि मेरी यह इलाही व राजनैतिक वसीयत केवल ईरानी जनता के लिए ही नहीं है बल्कि इस वसीयत का संबंध तमाम मुसलमानों तथा दुनियाँ के सभी मज़लूमों से है, चाहे वह किसी भी धर्म या राष्ट्र से संबंध रखते हों। खुदा वन्दे करीम से बड़ी विनम्रता के साथ यह दुआ करता हूँ कि वह एक पल के लिए भी हमें और हमारी कौम को अकेला न छोड़े और इस्लाम के

सपूतों तथा आदरणीय मुजाहिदों को एक पल के लिए भी अपनी दैवी कृपा से वंचित न करे।

रूहुल्लाह-अल-मूसवी-अल

खुमैनी

वसीयत

यह महान एवं शानदार इस्लामी क्रान्ति, जो करोड़ों महापुरूषों हज़ारों शहीदों तथा हज़ारों जाँबाज़ नौजवानों की कठिनाइयों एवं कुर्बानियों का नतीजा है, और जिससे दुनिया के करोड़ो मुसलमानों तथा कमज़ोर वर्ग के लोगों ने अपनी उम्मीद लगा रखी है, इसकी महानता का सही अनुमान लगाना बहुत कठिन है।

मैं रूहुल्लाह मूसवी खुमैनी अपनी तमाम गल्तियों के बावजूद खुदा वंदे-अलाम की रहमतों से मायूस नहीं हूँ। और आखिरत के इस लंबे सफर में केवल अल्लाह की रहमतो का ही सहारा है।

मैं धर्मशास्त्र के एक साधारण विद्यार्थी की हैसियत से जो दूसरे मुसलमान भाइयों की तरह इस इन्कलाब की तरक्की और खुशहाली की उम्मीद लगाए हुए है मौजूदा तथा भविष्य की नस्लों से वसीयत के रूप में कुछ बातें लिख रहा हूँ चाहे इन बातों को इससे पहले भी बार-बार आप लोगों के सामने बयान क्यों न कर चुका हूँ। खुदा वन्दे करीम से दरख़ास्त करता हूँ कि मुझे इन बातों को सच्चे मनोभाव से बयान करने की क्षमता प्रदान करे।

हम सब को मालूम है कि यह महान क्रान्ति, जिसने ईरान को अंतरराष्ट्रीय लुटेरों और अत्याचारीयों की लूट-खसोट से बचा लिया है, वास्तव में अल्लाह की दैवी कृपा से ही कामयाब हुई है। अगर खुदा वन्दे-आलम की असीम-कृपा न होती तो यह कदापि संभव न होता कि तीन करोड़ साठ लाख (36 Million) लोगों की यह आबादी इतने खतरनाक हालात में भी ऐसी महान सफलता प्राप्त कर लेती। जबकि इस्लाम तथा उलेमा विरोधी प्रचार-विशेष रूप से गत सौ वर्षों के बीच-अपनी चरम सीमा पर थे। राष्ट्रीयता के नाम पर राष्ट्र विरोधी तथा इस्लाम दुश्मन सभाओं, भाषणों एवं लेखों के माध्यम से देश के विभिन्न वर्गों के बीच फूट डालने और भेदभाव पैदा करने की अथाह तथा अथक कोशिश की जा रही थी। देश के कुकर्मी बादशाह उसके अत्याचारी एवं असभ्य पिता तथा विश्व की महान शक्तियों के दूतावासों द्वारा देश के उन कर्मशील नौजवानों को बुरी आदतों का शिकार बनाया जा रहा था जो अपने वतन की तरक्की में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते थे। वास्तव में इन देश विरोधी कामों के लिए नाममात्र पार्लियामेंट तथा मंत्रिमंण्डल के सदस्यों का सहारा लिया जाता था। और इसका उद्देश्य

नौजवान पीढ़ी को शाही सरकार के कुकर्मों की ओर से लापरवाह बनाए रखना था। इस काम के लिए शराब तथा नशीले पदार्थों की सप्लाई करने वाले विभिन्न अड्डे कायम किए गए थे तथा कविताएँ और लतीफ भी गढ़े जाते थे। इन तमाम बातों के अतिरिक्त देश के विश्वविद्यालयों, स्कूलों तथा उन सभी शिक्षा केन्द्रों की बड़ी दुर्दशा थी, जिनके हाथों में देश के भाग्य का फैसला सौंपा जाता था। यहाँ राष्ट्र और राष्ट्रप्रियता के नाम पर इस्लाम तथा इस्लामी सभ्यता के कट्टर दुश्मन बल्कि वास्तविक राष्ट्रीयता के भी विरोधी पश्चिम-प्रेमी या पूरब के गुलाम अध्यापकों की नियुक्ति की जाती थी। यद्यपि इन अध्यापकों के बीच कुछ लोगों को अपनी जिम्मेदारी का एहसास था। लेकिन ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम थी, और इन लोगों पर इतना गहरा दबाव था कि ये लोग कोई विशेष भूमिका नहीं अदा कर पा रहे थे। इसके अलावा भी अनेकों प्रकार की समस्याएँ थीं जैसे धार्मिक नेताओं को एकान्त का जीवन व्यतीत करने के लिए विवश कर देना। झूठे प्रचारों के द्वारा अनेक धार्मिक नेताओं के विचारों को सच्चे रास्ते से हटा देना आदि। इन हालात में संभव न था कि जनता इस प्रकार संगठित होकर उठ खड़ी हो और पूरे देश में एक ही लक्ष्य के लिए अल्लाह-ओ अकबर का नारा गूँजने लगे। और जनता अपनी कीमती और आश्चर्यजनक कुर्बानियों के द्वारा विदेशी शक्तियों तथा उनके गुलामों को पीछे धकेल कर देश के भाग्य का फैसला करे और उसकी बागडोर अपने हाथों में संभाल ले।

अतः इसमें संदेह नहीं करना चाहिए कि ईरान का इस्लामी इन्कलाब हर प्रकार से चाहे उसके अस्तित्व का क्षेत्र हो या उसके लक्ष्य तथा उद्देश्य की बात हो, विश्व की अन्य सभी क्रान्तियों से अलग तथा अधिक महत्वपूर्ण है। और इसमें कोई संदेह नहीं कि यह एक दैवी उपहार तथा इलाही-तोहफा था जो खुदा बन्दे करीम की तरफ से इस मज़लूम और कुचली हुई जनता को प्रदान किया गया है।

इस्लाम और इस्लामी हुकूमत एक दैवी-उपहार है जो यदि प्रचलित हो जाय तो इस्लाम के सपूतों के लिए दुनियाँ और अखिरत की महानता का माध्यम बन सकती है। और इसमें इतनी शक्ति और क्षमता मौजूद है कि हर प्रकार के अत्याचार, कुकर्म तथा लूटखसोट का सर्वनाश करते हुए लोगों को उनके महान लक्ष्य तक पहुँचा सकती है। इस्लाम एक ऐसा शिक्षा केन्द्र है जो अनेकेश्वरवादी केन्द्रों के विपरीत तमाम व्यक्तिगत, समाजिक, भौतिक, सांस्कृतिक राजनैतिक, सैनिक तथा आर्थिक मामलों में पूरी तरह हस्तक्षेप करता है और उनकी कड़ी निगरानी करता है। तथा मनुष्य और समाज की शिक्षा-दीक्षा और उसकी भौतिक तथा पारलौकिक उन्नति में सहायक है तथा सूक्ष्मतम विषयों के बारे में भी लापरवाही नहीं बरतता। इस्लाम ने व्यक्ति और समाज की उन्नति राह में आने वाली तमाम कठिनाइयों तथा रूकावटों से लोगों को अवगत करा दिया है, और इन खराबियों को पूरा करने की कोशिश भी की है।

अब जबकि खुदा वन्दे आलम की सहायता एवं कृपा से वफ़ादार और ज़िम्मेदारी महसूस करने वाली जनता के मज़बूत हाथों से इस्लामी गणतंत्र की आधारशिला रखी जा चुकी है और इस इस्लामी हुकूमत की दृष्टि में केवल इस्लाम और उसके प्रगतिशील

आदेश है, तो ईरान की गौरवमयी जनता का यह कर्तव्य है कि वह इन आदेशों को हर प्रकार से पालन करे और इसको सुरक्षित रखने का भरपूर प्रयत्न करे क्योंकि इस्लाम की सुरक्षा सभी आवश्यक (वाजिब) कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण है। और हज़रत आदम (अ) से लेकर खुदा के आखिरी नबी (सल) तक सभी पैगंबरों ने इस उद्देश्य की राह में बड़ी कोशिश की है तथा अनेकों प्रकार की कुर्बानियाँ भी दी हैं। और बड़ी से बड़ी रूकावट भी इन्हें इस महान कार्य को पूरा करने से नहीं रोक सकीं। इसी तरह इनके बाद इनके वफ़ादार साथी तथा आइम्मा-ए-इस्लाम (अलै) ने भी इसकी सुरक्षा के लिए अपना खून निछावर कर देने की हद तक कठिन परिश्रम व जानतोड़ कोशिशें की हैं। अतः आज ईरान की जनता पर विशेष रूप से और संसार के तमाम मुसलमानों पर आमतौर से ये वाजिब है कि वह आपनी पूरी ताक़त के साथ इस दैवी अमानत की सुरक्षा करें जो ईरान में सरकारी तौर पर सबके सामने आ चुकी है और बहुत कम समय में ही इसके महत्वपूर्ण लाभदायक परिणाम भी सामने आ चुके हैं। इन लोगों की जिम्मेदारी है कि वह इसको सुरक्षित एवं जीवित रखने के लिए आवश्यक उपाय करे और इसकी राह में आने वाली हर कठिनाई और रूकावटों को दूर करने की कोशिश करें। उम्मीद है कि इसके प्रकाश की परछाई से तमाम इस्लामी देश जगमगा उठेंगे और पूरे विश्व की जनता मानव जीवन निर्माण से संबंध रखने वाले इस महान कार्य में एक दूसरे से मिलजुलकर एतिहासिक अपराधियों तथा दुनिया को हड़पने वाली महाशक्तियों के चंगुल से दुनियाँ के मज़लूम लोगों को कयामत तक के लिए सुरक्षित कर लेंगे।

अपने जीवन की आखिरी साँस लेते हुए मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ कि इस दैवी अमानत की सुरक्षा के लिए आवश्यक बातों को आप लोगों के सामने बयान कर दूँ तथा इसकी राह में रूकावट पैदा करनेवाली चीज़ों से मौजूदा तथा आने वाली पीढ़ियों को अवगत करा दूँ। और इस महान कार्य के लिए मैं ईश्वर की असीम कृपा की याचना करता हूँ।

(क) इसमें कोई शक नहीं कि इस्लामी क्रान्ति का रहस्य भी वही है जो इसकी सफलता का रहस्य रहा है। और इसके और आने वाली पीढ़ियाँ इतिहास में पढ़ेंगी कि इस सफलता के दो आधारभूत कारण थे। पहला कारण इलाही भावना के साथ इस्लामी हुकूमत की स्थापना का महान लक्ष्य था और दूसरा कारण इस महान लक्ष्य को वास्तविक रूप देने के लिए देशभर की जनता के बीच पैदा होने वाली महान एकता थी। मैं सभी आधुनिक और आने वाली पीढ़ियों से वसीयत करता हूँ कि अगर आप इस्लाम और अल्लाह को हुकूमत को कायम रखना चाहते हैं तो इस महान दैवी लक्ष्य और इलाही मक़सद को, जिसका कुरआन में बार-बार उल्लेख किया गया है, हाथ से न जाने दीजिए। वास्तव में वह दैवी भावना ही इसकी सफलता और सुरक्षा का वास्तविक रहस्य है। इसके विपरीत लक्ष्य को भुलाकर आपसी मतभेद तथा अलगाववाद को बढ़ावा देना है। यही कारण है कि दुनियाँ की तमाम प्रोपगंडा मशीने और उनके स्थानीय एजेण्ट फूट डालने वाली झूठी बातें गढ़ने और अफवाहें फैलाने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं। और अरबों डालर की रक़म इस काम के लिए खर्च कर रहे हैं।

इस इलाके में इस्लामी गणतंत्र के दुश्मनों का लगातार आवागमन बेमक़सद नहीं है। और बड़े खेद की बात है कि उनके बीच कुछ इस्लामी देशों के ऐसे शासक और नेता भी दिखाई देते हैं जो आँख कान बन्द करके अमरीका की ग़ुलामी के लिए तैयार है। इन लोगों को अपने व्यक्तिगत लाभ के अतिरिक्त किसी चीज़ की कोई फ़िक्र नहीं है। और धार्मिक नेताओं का रूप धारण किए हुए कुछ ठोंगी और दरबारी उलेमा इन नाममात्र के इस्लामी शासकों के साथ हो गए हैं। आज और भविष्य में भी जो चीज़ ईरानी जनता तथा विश्व के मुसलमानों को अपनी निगाह में रखना चाहिए और जिसे अहमियत देनी चाहिए वह यह है कि उन्हें घरों को उजाड़ देने वाले और तबाही व बर्बादी फैलाने वाले प्रोपगंडों को असफल बनाना है। तमाम मुसलमानों विशेष रूप से मौजूदा ईरानी जनता के लिए मेरी यह वसीयत है कि वह इन इस्लाम दुश्मन षडयंत्रों को मुकाबला करने के लिए उठ खड़े हों और हर संभव उपाय का प्रयोग करते हुए अपनी एकता और अखण्डता को मज़बूत बनाकर काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों को हताश कर दे।

(ख) इन बड़े षड़यंत्रों में से एक षडयंत्र जो आधुनिक युग में विशेष रूप से इस्लामी क्रान्ति की सफलता के बाद सामने आया है वह विभिन्न कौमों विशेषतः ईरान की साहसी कौम को इस्लाम धर्म से हताश करने के लिए ना-ना प्रकार के विस्तृत प्रोपगंडे हैं। कभी खुल्लमखुल्ला ये एलान करते हैं कि इस्लामी कानून चौदह सौ साल पहले बने हैं और इनमें आधुनिक युग में देशों का शासन चालने की क्षमता नहीं है। या यह कि इस्लाम एक पिछड़ा हुआ धर्म है जो हर नई खोज और आधुनिक सभ्यता का मुख़ालिफ़ है। और इस युग में कोई भी देश अंतर्राष्ट्रीय सभ्यता से अलग नहीं रह सकता। इस प्रकार के अनेक मूर्खता-पूर्ण प्रोपगंडे और कभी-कभी अपने शैतानी विचारों को फैलाने के लिए इस्लामी पवित्रता की सुरक्षा की आड़ में किए जाने वाले प्रोपगंडों में ये कहा जाता है कि इस्लाम और अन्य इलाही धर्म केवल रूहानियात तथा मानव आत्मा की पवित्रता से संबंध रखते हैं। वह सांसरिक पदों से अलहदगी और दूरी और दुनिया से विरक्त होकर दुआओं और इबादतों में लगे रहने का उपदेश देते हैं। ऐसे उपदेश जो मानव जाति को ख़ुदा वन्दे आलम से नज़दीक और दुनियाँ से दूर करते हैं। अतः हुकूमत और राजनीति में हस्तक्षेप इस महान रूहानी उद्देश्य के विरूद्ध है, क्योंकि ये तमाम चीज़ें दुनियाँ के निर्माण के लिए हैं और दुनियाँदारी पैंगबरों के बताए हुए रास्ते के खिलाफ़ है। और खेद की बात तो यह है कि दूसरे प्रकार के प्रोपगंडे ने कुछ उलेमा और इस्लाम से बेखबर लोगों पर इस हद तक असर डाला है कि वह शासन और राजनीति को गुनाह और महापाप समझने लगे थे। और शायद आज भी कुछ लोग इस प्रकार का विचार रखते हों। ये वह महान दुख है जिसने इस्लाम को भी अपने चंगुल में दबोच रखा था।

पहले गिरोह के बारे में तो यह कहना चाहिए कि या तो वह हुकुमत कानून और राजनीति से बिल्कुल अनजान हैं या अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को निगाह में रखे हैं क्यों कि न्याय और इन्साफ की बुनियाद पर आदेशों का पालन, अन्याय अत्याचार और मनमानी हुकूमतों की रोकथाम और व्यक्तिगत तथा सामाजिक न्याय की

स्थापना अनेकानेक बुराइयों पर पाबंदी, बुद्धि और न्याय के अनुसार आज़ादी, आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता, साम्राज्यवाद की शोषणता तथा गुलामी का सर्वनाश, दुनियाँ को बुराई से सुरक्षित रखने और एक मानव समाज को तबाही से बचाने के लिए न्याय पर आश्रित सज़ाएँ बदला और कानून की दीवारों की स्थापना राजनीति और समाज को बुद्धि और न्याय की डगर पर चलाना और इसी प्रकार के सैकड़ों दूसरे काम ऐसी चीजें नहीं हैं जो मानवता तथा सामाजिक जीवन के लंबे इतिहास में पुरानी और मुरझाई हुई हो जाये। यह दावा ऐसा ही है कि कोई यह कहे कि तर्क एवं कानून पर आधारित नियमों को आधुनिक शताब्दी में बदल देना चाहिए और इसकी जगह आधुनिक कानून को ले लेनी चाहिए। अगर संसार की रचना के आरम्भ में सामाजिक न्याय की स्थापना और कत्ल, लूट-खसोट तथा अन्याय और अत्याचार की रोकथाम आवश्यक थी, तो चूँकि आज अणु-युग है अतः अब वह तरीका पुराना हो चुका है। और यह कहना की इस्लाम नई खोज का मुख़ालिफ है जैसा कि ईरान का बादशाह मुहम्मद रज़ा पहल्वी कहा करता था कि : "ये उलेमा इस युग में भी गधों पर बैठकर सफ़र करना चाहते हैं"- एक मूर्खतापूर्ण आरोप के अलावा कुछ भी नहीं है। क्यों कि अगर आधुनिक सभ्यता और नएपन का मतलब यही नई खोज और प्रगतिशील औद्योगिक कारोबार हैं तो कभी भी इस्लाम अथवा किसी भी एकेश्वरवादी धर्म ने न इसका विरोध किया है और न करेगा। बल्कि इस्लाम और कुरआन मजीद में तो ज्ञान तथा कला को हासिल करने पर बड़ा ज़ोर दिया है। और अगर नई खोज और आधुनिक सभ्यता का अर्थ वह है जो कुछ पेशावर बुद्धिजीवी बयान करते हैं कि हर बुरे काम यहाँ तक कि समान लिंग के बीच अनैतिक सम्बन्ध (Homosexuality) की स्वतंत्रता होनी चाहिए, तो इसके तमाम आसमानी धर्म और बुद्धिजीवी लोग सख़्त विरोधी हैं। यद्यपि पूरब और पश्चिम के पुजारियों द्वारा इस प्रकार की स्वतंत्रता का प्रचार बड़े स्तर पर किया जा रहा है।

दूसरा गिरोह अपनी शैतानी योजना के अनुसार इस्लाम को शासन और राजनीति से अलग समझता है इन मूर्खों को यह बता देना चाहिए कि कुरआने-मजीद और रसूले-खुदा (सल॰) की सुन्नत में राजनीति और शासन के संबंध में जितने आदेश बयान किए गए हैं उतने किसी दूसरे विषय के बारे में कदापि नहीं हैं। बल्कि इस्लाम के बहुत से इबादती-आदेश भी वास्तव में राजनीतिक महत्वता से भरे हुए हैं। और इन आदेशों की तरफ से लापरवाही के कारण इन कठिनाइयों ने जन्म लिया है। स्वयं पैगंबरे इस्लाम ने दुनियाँ की तमाम हुकूमतों की तरह हुकूमत की स्थापना की परन्तु उनका ध्येय सामाजिक न्याय की स्थापना करना था और इस्लामी युग के प्रारंभिक ख़लीफ़ा लोगों की विस्तृत हुकूमत भी इसी उद्देश्य के अनुसार और अधिक विस्तृत पैमाने पर एतिहासिक तथ्यों में से है। इसके बाद भी इस्लाम के नाम पर हुकूमत कायम रही है और आज भी इस्लाम और रसूले-अकरम (सल॰) की पैरवी में बहुत से लोग इस्लामी हुकूमत के दावेदार हैं। मैं इस वसीयत-नामे में केवल इशारा करते हुए आगे बढ़ रहा हूँ लेकिन उम्मीद रखता हूँ कि लेखक इतिहासकार तथा समाजशास्त्र के विशेषज्ञ मुसलमानों को इस प्रकार के गलत विचारों से छुटकारा दिलाएंगे और जो कुछ

कहा जा चुका है तथा कहा जा रहा है कि अल्लाह के पैगंबरों को केवल रूहानी बातों से मतलब है और दुनियाँ की हुकूमत और राजनीति बहुत बुरी चीज़ है, पैगंबर, औलिया और महापुरूषों ने इससे कोई संबंध नहीं रखा और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए वह एक बड़ी दुखद भूल है जिसका परिणाम इस्लामी कौमों को तबाहओं-बर्बाद करने और खूँखार साम्राज्यवादियों के लिए पथ प्रशस्त करने के सिवा कुछ नहीं है। क्योंकि इस्लाम की निगाह में जो चीज़ बुरी है वह दुनिया के अवैध लक्ष्य तथा सत्ता को कायम रखने के लिये अत्याचार और अन्याय का सहारा लेने वाली हुकूमतें हैं और इन हुकूमतों से दूर रहने का आदेश दिया गया है। इसके अतिरिक्त जमाखोरी, सत्ता की लालच और अमानवीय कामों से रोका गया है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि इस्लाम ने जिस दुनियाँ की बुराई की है वह दुनिया मनुष्य को ईश्वर से लापरवाह बना देती है। लेकिन समाज में न्याय की स्थापना, अन्याय और अत्याचार की रोकथाम तथा कमजोर एवं दलित वर्ग की सहायता के लिये हुकूमत कायम करना ऐसा महान कार्य है जिसके लिये सुलेमान बिन दाऊद, पैगम्बरे इस्लाम (सल॰) तथा उनके वास्तिविक उत्तराधिकारी जैसे महान पुरूषों ने कठिन परिश्रम किया है। और यह बात महत्वपूर्ण आवश्यक धार्मिक कार्यों में समझी जाती है। और ऐसी हुकूमत की स्थापना तो महान उपासना के समान हैं। परन्तु स्वस्थ राजनीति जो इन हुकूमतों में पायी जाती थी, बहुत आवश्यक है। ईरान की होशियार एवं सचेत जनता को अपनी विशेष इस्लामी सूझबूझ के साथ इन षडयंत्रों को असफल बना देना चाहिये। अपनी जिम्मेदारी महसूस करने वाले वक्ताओं तथा लेखकों को जनता की सहायता के साथ उठ खड़ा होना चाहिए और षडयंत्रकारियों के हाथ काट देना चाहिये।

(स) इसी प्रकार के षडयंत्रों में से एक और शायद सबसे ज्यादा खतरनाक और दुखद साजिश पूरे देश में विशेषरूप से अधिकतर शहरों में इन अफवाहों को फैलाना है कि "इस्लामी गणतंत्र ने भी जनता की कोई सेवा नहीं की। दुख की मारी हुई बेचारी जनता ने बड़े शौक और जोश के साथ कुर्बानियाँ दी ताकि उन्हें शैतान की अत्याचारी हुकूमत से छुटकारा मिल जाय लेकिन वह पहले से ज्यादा खराब हुकूमत के चंगुल में फँस गये। अत्याचारी वर्ग पहले से ज्यादा ताकतवर हो गया और कमजोर वर्ग के लोग और अधिक कमजोर हो गये हैं। देश के कारागारों में उन नौजवानों को बंद कर दिया गया है जो देश के भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। लोगों को पिछली हुकूमत से अधिक अमानवीय ढंग से यातना दी जा रही है। रोज़ाना कुछ लोगों को इस्लाम के नाम पर मौत के घाट उतारा जा रहा है और काश इस गणतंत्र के साथ इस्लाम का नाम शामिल न किया जाता। यह जमाना तो रज़ा खाना और उसके बेटे के शासनकाल से भी ज्यादा खराब है। जनता दुख, कठिनाई तथा घातक महंगाई के सागर में डूबती जा रही है और सत्ताधारी वर्ग ने नेता इस हुकूमत को कम्युनिस्टी हुकूमत की तरफ खीचे लिये जा रहे हैं। जनता की दौलत और उनकी व्यक्तिगत जायदाद को जब्त किया जा चुका है।" इसी प्रकार की और बहुत सी अफवाहें हैं जिनको योजनाबद्ध रूप में फैलाया जा रहा है और इन अफवाहों के पीछे खतरनाक साजिश और घातक योजना के मौजूद होने का सुबूत यह है कि कुछ दिनों

के फासले से नगर की गलियों में किसी एक विषय का चर्चा होता है फिर जहाँ जाओ उसी विषय पर चर्चा सुनाई देती है। टैक्सी हो या बस हर जगर उसी बात की चर्चा होती है। केवल इतना ही नहीं बल्कि जहाँ कहीं कुछ लोग इकट्ठा होते हैं इसी विषय पर बातचीत शुरू हो जाती है। और जब कुछ समय के बाद यह विषय पुराना हो जाता है तो एक नया विषय सामने आ जाता है और लोग उस पर चर्चा करने लगते हैं। और कितने दुख की बात है कि कुछ धार्मिक नेता और उल्मा, जो शैतानी, कुचक्रों और षडयंत्रों से अपरिचित हैं, षडयंत्रकारी गिराह के एक दो एजेन्टों के कहने से यह विश्वास कर लेते हैं कि यही अफवाहें सही हैं। और इसका दूसरा कारण यह है कि इन अफवाहों को सुनने और उस पर विश्वास कर लेने वाले लोग अन्तर्राष्ट्रीय हालात, दुनिया के अनेक भागों में पैदा होने वाली क्रान्ति तथा क्रान्ति के बाद होने वाली घटनाओं तथा क्रान्ति की सफलता के बाद उत्पन्न होने वाली समस्याओं से बेखबर होते हैं। इसी तरह उन्हें इन क्रान्तिकारी परिवर्तनों का भी ज्ञान नहीं होता जो शतप्रतिशत इस्लाम के पक्ष में है। वह दुनिया और दुनिया के हालात से बेखबर आँख बंद करके इस प्रकार की अफवाहों को सुनते हैं और स्वयं भी अनजाने में या जानबूझ कर उनके गिरोह में शामिल हो गये हैं। मैं इन लोगों को यह नसीहत करता हूँ कि दुनिया की मौजूदा स्थिति का ध्यानपूर्वक अध्ययन तथा संसार की अन्य क्रान्तियों से ईरान की इस्लामी क्रान्ति की तुलना किए बिना और इसी प्रकार उन कौमों और देशों की स्थिति का अध्ययन किये बिना जहाँ क्रान्ति आयी है और यह देखें बिना कि क्रान्ति से पहले व क्रान्ति के समय में तथा उसके पश्चात उस देश के लोगों पर क्या गुजरी है, इसके साथ ही साथ शैतानी चंगुल में फंसे हुये इस देश की उन कठिनाइयों तथा समस्याओं की समीक्षा से पहले जिनमें यह देश रज़ाखान तथा उसके कुपुत्र मुहम्मद रज़ा के खूनी पंजों में गिरफ्तार तथा इन लोगों की लूट खसोट का शिकार रहा है, और उनकी पैदा की हुई कठिनाइयाँ और समस्यायें इस हुकूमत को मीरास में मिली है सर्वनाशक गुट बंदियों से लेकर मंत्रालयों, सरकारी दफ्तरों तथा आर्थिक एवं सैनिक क्षेत्रों तक अय्याशी के अड्डे, शराब की दुकानें, जीवन के हर क्षेत्र में गंदगी और बेशर्मी, शिक्षा दीक्षा की स्थिति, स्कूलों, कालेजों तथा विश्वविद्यालयों का वातावरण, सिनेमाहाल अय्याशीके अड्डे, नौजवानों और औरतों की दुर्दशा, उल्मा तथा धार्मिक व स्वतंत्रता प्रिय लोगों की दुखद स्थिति तथा मान मार्यादा वाली औरतों तथा शाही सरकार में मस्जिदों की वास्तिविक स्थिति की समीक्षा करने और फिर उस समय में मौत या कारावास की सज़ा पाने वाले लोगों की अदालती मिसिल का अध्ययन करने, कारागारों की समीक्षा करने, जिम्मेदार लोगों के आचारण के बारे में खोज़बीन करने, पूँजीपतियों, बड़ीबड़ी ज़मीन हड़पने वालों- जमाखोरों, महंगाई को बढ़ावा देने वालों की जायदाद के विषय में जानकारी प्राप्त करने, सामान्य तथा क्रान्तिकारी अदालतों के विषय में छानबीन करने तथा इनकी शाही युग की अदालतों से तुलना, करने, इस्लामी पार्लियामेंट के सदस्यों, इस हुकूमत के मन्त्रियों गर्वनरों तथा अन्य सरकारी अफसरों की समीक्षा करने तथा शाही शासनकाल से इसकी तुलना करने, उन देहाती क्षेत्रों की जहां पीने के पानी और रोगियों के इलाज की सुविधा भी न थी, आज सरकार और "जेहाद-ए-साजिन्दगी" 'कारनामों के साथ तुलना करने, थोपी गई जंग और इस से पैदा होने वाली कठिनाइयों

और समस्याओं जैसे लाखों जंगी मुहाजिरीन को निगाह में रखते हुये तथा लाखों इराकी तथा अफगानी पनाहकों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुये पिछले युग की हुकूमत से इसकी तुलना करने आर्थिक नाकाबंदी, अमरीका और उसके आंतरिक तथा विदेशी एजेण्टों द्वारा लगातार साज़िशों पर निगाह डालने, और समस्या से भलि-भाँति परिचित धर्म प्रचारकों तथा इस्लामी न्यायधीशों की कमी, इस्लाम विरोधी तत्वों और गुमराहों एवं बेवकूफ़ दोस्तों द्वारा पैदा की जाने वाली समस्याओं, जिन्हें उत्पन्न करने की तैयारी हो रही है और इसी प्रकार की अन्य समस्याओं पर ध्यान देने और उनका गहरा अध्ययन कर लेने से पहले अनेकानेक एतराज़ की बौछार न करें। और नाशक आलोचनाओं तथा गाली गलौज का दरवाज़ा न खोले। इस अत्याचार सहन करने वाले गरीब इस्लाम के हाल पर दया कीजिए जो सैकड़ों साल तक तानाशाहों के अन्याय और अत्याचार और जनता की अज्ञानता का शिकार होने के बाद अभी-अभी अपने पैर पर खड़ा हुआ है और उसे आंतरिक और बाहरी दुश्मन चारों ओर से घेरे हुए हैं। नाशक आलोचना करने वाले तनिक यह सोचें कि इस्लामी हुकूमत का विरोध करने के बजाय क्या यह बेहतर नहीं है कि वह सुधार एवं सहायता करने का प्रयत्न करें, मुनाफिकों अत्याचारियों, पूँजीपतियों और खुदा से बेख़बर न्याय दुश्मन जमाखोरों की सहायता के बजाय मज़लूमों कमज़ोरों तथा दलित वर्ग के लोगों की सहायता करें आतंकवादी गिरोहों का पक्षपात और उनकी अप्रत्यक्ष सहायता के बजाय उन उलेमा और हुकूमत के मज़लूम सेवकों की तरफ ध्यान दें जो इन गिरोहों के आतंकवाद का निशाना बने हुए हैं।

मैंने न कभी यह कहा है और न यह कहता हूँ कि आज इस गणतंत्र में इस्लाम के सभी आदेशों का पालन हो रहा है। और कुछ लोग अपनी मूर्खता या कानून दुश्मनी की बुनियाद पर इस्लामी आदेशों के खिलाफ काम नहीं कर रहे हैं!! परन्तु इतना अवश्य कहता हूँ कि देश की न्यायपालिका विधानपालिका और कार्यपालिका इस देश को इस्लामी बनाने के लिए जानतोड़ कोशिश कर रही है और जनता के करोड़ों लोग भी इसके सहायक और मददगार हैं। यदि यह रोड़े अटकाने वाले तथा नाशक आलोचना करने वाले अल्पसंख्यक लोग भी अनकी सहयता करने लगें तो इस्लामी क्रान्ति की मनोकामनाओं को पूरा करने में कुछ तेज़ी और सुविधा हो जाएगी। और अगर ईश्वर न करे यह लोग होश में न भी आए तो भी चूँकि इस जनता में जागृति पैदा हो चुकी है और लोग समस्याओं से भलिभाँति अवगत तथा कार्यस्थल में तन-मन धन से उपस्थित भी हैं अतः इन्शा-अल्लाह ये इस्लामी और इन्सानी मनोकामनाएँ आश्चर्य जनक रूप से अवश्य पूरी होगी। और यह अकारण आलोचना करने वाले लोग इस उमड़ते हुए तूफ़ान के मुकावले में ठहर नहीं सकेंगे।

मैं पूरे विश्वास के साथ यह दावा करता हूँ कि आधुनिक युग में ईरान की जनता और इस कौम के लाखों लोग रसूल अल्लाह (सल॰) के युग की कौमें-हिजाज़, अमीर-अल-मोमनीन और हुसैन इब्ने अली (अलै॰) के युग में कूफ़ा और इराक़ की कौम से बेहतर हैं। यह हिजाज़ वाले हैं कि रसूलअल्लाह (सल॰) के युग में भी आपकी आज्ञा का पालन नहीं करते थे और तरह-तरह का बहाना बना कर युद्धस्थल की ओर

जाने से कतराते थे। अतैव खुदा-वन्दे आलम ने सूर-ए-तौबा की कुछ आयतों के द्वारा ऐसे लोगों को चेतावनी देते हुए खतरनाक सज़ा की सूचना दी है। इन लोगों ने रसूल-अल्लाह (सल॰) इतनी झूठी बातें जोड़ दीं कि रवायतों के अनुसार रसूल-अल्लाह (सल॰) ने इन लोगों पर लानत और धिक्कार की है और वह कूफ़-ओ-इराक़ के लोग हैं जिन्होंने अमीरूल मोमनीन के साथ इतना दुर्व्यवहार किया और आपके आदेशों की इतनी अवहेलना करते रहे कि इनके बारे में हज़रत-अली (अलै॰) की शिकायतें किताबों में दर्ज और इतिहास में मशहूर हैं। और वह कूफा और ईराक़ के ही मुसलमान हैं कि शहीदों के सरदार इमाम हुसैन (अलै॰) के साथ वो सब कुछ होता रहा, जो हुआ है, और जिन लोगों ने आपकी शहादत में अपने हाथों को रंगीन नहीं किया वो या तो रणभूमि से भाग गए या अपने घरों के अन्दर बैठे रहे। यहाँ तक कि वह ऐतिहासिक अपराध घटित हो गया। लेकिन आज हम देख रहे हैं कि ईरानी कौम चाहे वह सेना हो या अवामी और कबायली फोर्स, रणभूमि की पहली पंक्ति हो या अंतिम हर जगह किस उत्साह और उल्लास के साथ कुरबानियाँ दे रही है और बीरता के कैसे-कैसे नमूने पैदा कर रहीं हैं। और हम देख रहे हैं कि पूरे देश की जनता कितनी मूल्यवान सहायता पहुँचा रही है। और हम देख रहे हैं कि युद्ध से क्षतिग्रस्त लोग और शहीदों के घर और खानदान वाले किस वीरता और संतोषजनक आचरण के साथ हमारे और आपके सामने आते हैं। ये सब कुछ खुदा वंदे आलम इस्लाम और अक्षय-जीवन से उनके अगाध प्रेम उनके शक्तिशाली ईमान और विश्वास का नतीजा है। हालांकि वो लोग न रसूले-मकबूल (सल॰) के सामने खड़े हैं और न मासूम इमामों के सामने हैं। बल्कि यह अल्लाह पर उनके ईमान और इत्मिनान की देन है और यही अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कायमाबी का रहस्य है। इस्लाम को गर्व करना चाहिए कि उसने अपनी गोद में ऐसे सपूतों को पाला है और हम सब को गर्व है कि एक ऐसे युग में और एक ऐसी कौम की सेवा में लगे हुए हैं।

मैं यहाँ पर एक वसीयत उन लोगों से भी करता हूँ जो अनेक उद्देश्यों और कारणों की बुनियाद पर इस्लामी गणतंत्र का विरोध करते हैं। और उन जवान लड़के-लड़कियों से जिन्हें स्वार्थी और अवसरवादी मुनाफ़िक़ीन अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं, कि तुम लोग स्वतंत्र विचार के साथ गुटनिर्पेक्ष होकर सोचो और फैसला करो, और वो लोग जो इस्लामी गणतंत्र को नाबूद करना चाहते हैं उनके प्रचारों कार्यविधियों और गरीब जनता के साथ उनके विचारों की समीक्षा करो और उन गिरोहों और हुकूमतों के बारे में छानबीन करो जो उनकी सहायता कर रहे हैं। और इसी प्रकार देश के अन्दर जो लोग और दल उनसे-गठजोड़ किए हुए हैं और उनकी सहायता कर रही हैं उनकी विवेचना करो। उनके आचारण तथा अपने चाहने वाले के साथ उनके व्यवहार और विभिन्न समस्याओं और घटनाओं के सम्बन्ध में उनके विचारों में होने वाले परिवर्तन के विषय में ध्यान पूर्वक खोज करके देखो तथा उन लोगों की जीवनी का अध्ययन करो जो इस इस्लामी गणतंत्र में मुनाफ़िक़ों द्वारा शहीद हुये हैं। इसके बाद उनके और उनके दुश्मनों का तुलनात्मक अध्ययन करो। इन शहीदों के

मुनाफिक़ों की कैसेट शायद तुम लोगों के पास मौजूद हों। देखो इनमें से कौन सा गिरोहसमाज के कमज़ोर और दलित लोगों का सहायक और मददगार है।

भाइयो! तुम लोग इन कागज़ात (वसीयत नामा) को मेरी मौत से पहले न पढ़ सकोगे। सम्भवतः मेरे बाद तुम इसे पढ़ो। उस समय मैं तुम्हारे पास मौजूद न रहूँगा कि अपने निजी फायदे और किसी उच्च पद की प्राप्ति के लिये तुम लोगों को ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सकूँ और तुम्हारे जवान दिल से खेलना चाहूं। चूंकि तुम लोग सभ्य नौजवान हो इसलिये मैं चाहता हूँ कि तुम अपनी जवानी को खुदा, इस्लाम और इस्लामी गणतंत्र के लिये खर्च करो ताकि तुम्हें दोनों दुनियाँ की नेकियों का फायदा हासिल हो सके। मैं दयालु एवं कृपालु ईश्वर से दुआ करता हूँ कि वह मानवता के सीधे और सच्च मार्ग की तरफ तुम्हारा नेतृत्व कर दे और महान कृपा से काम लेते हुये हमारे और आपके बीते हुये कार्यों की तरफ अधिक ध्यान न दे। तुम भी एकान्त में खुदावन्दे आलम से यही दुआ करो क्योंकि वह मार्ग दर्शक एवं कृपालु है।

एक वसीयत मैं ईरान की जनता और महाशक्तियों के चंगुल में गिरफ्तार और अत्याचारी हुकूमतों के पंजे में दबी हुई तमाम कौमों से करता हूँ।

ईरान की जनता से मेरी वसीयत यह है कि जो बहुमूल्य वस्तु आप लोगों ने अपने पवित्र युद्ध और अपने भयाग्यशाली युवकों के खून द्वारा प्राप्त की है उसका एक अत्याधिक प्रिय वस्तु के समान आदर कीजिये और इस इलाही अमानत की भरपूर सुरक्षा का प्रयत्न कीजिये और इस सच्चे और सीधे मार्ग की राह में आने वाली कठिनाइयों से भयभीत न होइये क्योंकि इस्लामी गणतंत्र को पेश आने वाली कठिनाइयों और समस्याओं को दूर करने की कोशिश कीजिए। हुकूमत और पार्लियामेंट को अपना समझिए तथा एक प्यारी सम्मान-जनक और मूल्यवान वस्तुओं की तरह इनकी सुरक्षा कीजिए। मंत्रिमण्डल व पार्लियामेंट के सदस्यों और दूसरे जिम्मेदार अफ़सरों से वसीयत करता हूँ कि इस वफ़ादार कौम का भरपूर सम्मान कीजिए और इनकी सेवा विशेषरूप से कमज़ोर दलित और मज़लूम लोगों की सेवा में किसी प्रकार की कोताही न कीजिए। यह हमारी आँखों की रोशनी है। इस्लामी गणतंत्र इन्हीं लोगों की कोशिशों और कुर्बानियों का फल है और इन्हीं के द्वारा ही इसकी सुरक्षा की जा सकती है। स्वयं को जनता से और जनता को अपना समझिएगा। लूटमार करने वाली असभ्य और तानाशाही हुकूमतों की-- जो पहले थी और आज भी है-- हमेशा निंदा कीजिए अलबत्ता निन्दा करते समय इस्लामी हुकूमत की शानो-शौकत का पूरा-पूरा ध्यान रखिए।

इस्लामी कौमों से वसीयत करता हूँ कि ईरान कि इस्लामी गणतंत्र तथा ईरान की नई जनता को अपने लिए नमूना बना लें। और अगर आप की ज़ालिम हुकूमतें जनता की माँग को न माने तो पूरी ताक़त के साथ उन्हें उनके स्थान तक पहुँचा दीजिए। क्योंकि मुसलमानों के दुर्भाग्य का कारण यही पूरब और पश्चिम पर आश्रित हुकूमतें हैं। और मैं इस बात पर ज़ोरदेते हुए वसीयत करता हूँ कि इस्लाम और इस्लामी गणतंत्र के विरूद्ध किए जाने वाले प्रचारों की तरफ तनिक ध्यान न दीजिए। क्योंकि इन सब

की यही कोशिश है कि इस्लाम को मैदान से बाहर कर दें ताकि महाशक्तियों के स्वार्थों की सुरक्षा में कोई रूकावट न पैदा हो सके।

(द) साम्राज्यवादी तथा शोषण करने वाली महाशक्तियों की शैतानी योजना जिस का बरसों से पालन किया जा रहा है और जो ईरान में रज़ाख़ान के शासन काल में अपनी चरमसीमा पर पहुँच चुकी थीं और मुहम्मद रज़ा के समय में अनेकों प्रकार से जिसका पालन होता रहा है, उलेमा लोगों और धार्मिक नेताओं को एकान्तमय जीवन व्यतीत करने पर विवश कर देना है। अतैव रज़खान के दौर में धार्मिक पहनावे की छीन-झपट कारावास, निष्कासन, अपमान और फाँसी के फंदों के द्वारा इस योजना का पालन किया गया और मुहम्मद रज़ा के शासनकाल में दूसरी योजनाएँ तथा कुछ नई तरकीबें अपनाई गई। इन्हीं योजनाओं में से एक धार्मिक उलेमा तथा विश्वविद्यालय के विद्वानों के बीच शत्रुता पैदा करना था। इस संबंध में बड़े पैमाने पर प्रोपगंडा किया गया और खेद की बात है कि महाशक्तियों की इस शैतानी योजना और दोनों वर्ग की अज्ञानता के कारण षड्यंत्रकारियों को इस काम में मनचाही सफलता प्राप्त हुई। एक तरफ तो यह कोशिश की गई कि स्कूलों से विश्वविद्यालयों तक तमाम शिक्षक प्रधानाचार्य और उपकुलपति का चयन ऐसे लोगों के बीच से किया जाय जो पूरब-प्रेमी या पश्चिम की उपासना करने वाले तथा इस्लाम और अन्य धर्मों से पूरी तरह अलग-थलग हों। मोमिन, उत्तरदायी तथा भविष्य में हुकूमत की बागडोर संभालने वाले वर्ग के लोगों को बचपन से नौजवानी तक और नौजवानी से जवानी तक ऐसी ट्रेनिंग दी जाय कि वो हर धर्म विशेषतः इस्लाम से तथा उलेमा और धार्मिक प्रचारकों से घृणा करते रहें। उस युग में उलेमा तथा धार्मिक लोगों को अंग्रेज़ों का एजेण्ट बताया जाता था तदोपरान्त उनका परिचय पूंजिपतियों जमींदारों तथा रूढ़वादियों का सहायक तथा सभ्यता और प्रगति के विरोधी के रूप में कराया जाता था। दूसरी ओर झूठे प्रपोगंड़ों के द्वारा उलेमा धर्म प्रचारकों तथा धार्मिक लोगों को विश्वविद्यालय तथा विश्वविद्यालयों के लोगों से भयभीत कर दिया गया था। इन सब लोगों पर अधर्मी होने तथा इस्लाम व अन्य धार्मिक परंपराओं के विरोधी होने का आरोप लगाया जाता था। लोग इस्लाम और अन्य धार्मिक उलेमा के विरोधी हो जाते थे और जनता जो धर्म और धार्मिक उलेमा से प्रेम करती है वह हुकूमत और उसकी हर योजना की विरोधी बन जाये और हुकूमत व जनता तथा उलेमा व विश्वविद्यालय के लोगों के बीच यह गहरा मतभेद लुटेरों को ऐसा सुनहरा अवसर प्रदान कर दे कि देश के सारे कामकाज उनके चंगुल में और कौम का सारा ख़जाना उनकी जेब में पहुँच जाय। आख़िर में आपने देख ही लिया कि अत्याचार सहन करने वाली इस कौम के साथ क्या बरताव किया गया और भविष्य में क्या होने वाला था।

अब जबकि धार्मिक उलेमा विश्वविद्यालय के विद्वानों, व्यापारियों, किसानों, मज़दूरों तथा अन्य वर्ग के लोगों के लगातार जिहाद तथा खुदा-वन्दे आलम की इच्छा से ग़लामी की ज़ंजीरें टूट चुकी हैं। महाशक्तियों की ताक़त के मज़बूत बांध उखड़ चुके हैं और देश को उनके एजेण्टों के चंगुल से मुक्ति प्राप्त हो चुकी है मेरी वसीयत यह है कि मौजूदा और आने वाली पीढ़ी के लोग लापरवाही से काम न लें। अपनी मान मर्यादा

का ख़याल रखने वाले नौजवान तथा विश्वविद्यालय के लोग धार्मिक उलेमा तथा इस्लाम शास्त्र के विद्यार्थियों से अपने संबंध, दोस्ती, मित्रता, तथा आपसी मेलजोल को ज़्यादा से ज़्यादा मज़बूत बना लें और गद्दार दुश्मन की साज़िशों और योजनाओं से कदापि लापरवाह न हों। जैसे ही किसी व्यक्ति या व्यक्तिसमूह को देखें कि वह उन लोगों के बीच विरोध तथा शत्रुता का बीज बोना चाहता है उसको रोकें और अगर ऐसे लोगों पर डाँट फटकार और उपदेश का कोई असर न हो तो उससे अलग हो जायें। और उसे अपने समाज से बहिष्कृत कर दें और साज़िश को जड़ न पकड़ने दें। क्योंकि स्रोत के दहाने को सरलता से रोका जा सकता है, विशेषरूप से यदि शिक्षकों में कोई ऐसा व्यक्ति हो जो लोगों को रास्ते से भटकाना चाहता हो और उसे समझाने का कोई असर न हो तो फिर उसे अपने आप से और अपनी क्लास से दूर कर दें। इस वसीयत का ज्यादा संबंध उलेमा और धर्मशास्त्र के विद्यार्थियों से है। विश्वविद्यालयों में जन्म लेने वाले षड्यंत्र एक विशेष प्रकार की गहराई रखते हैं। अतः दोनों सम्मानित वर्ग जो समाज की विचारधारा बनाते हैं, इन षड्यंत्रों पर कड़ी निगाह रखें।

(ऊ) एक और षड्यंत्र, जिसने अन्य देशों के साथ-साथ हमारे प्यारे देश को भी बहुत अधिक प्रभावित किया है और उसके प्रभाव भी बुरी हदतक पूर्वी और पश्चिमी ब्लाक का पुजारी बना देना है कि इन देशवासियों ने अपनी शक्ति और सभ्यता को तुच्छ समझ लिया है और शक्ति के दो पूर्वी और पश्चिमी ब्लाकों की नस्ली व सांस्कृतिक श्रेष्ठता तसलीम कर ली। और इन दो ताकतों को सारी दुनियाँ का पेशवा मान बैठे तथा इन दो में से किसी एक ब्लाक पर आश्रित होना आवश्यक समझने लगे। इस दुखद घटना का किस्सा बहुत लंबा है और इसके कारण हम लोगों को जो नुकसान पहुंचा है और आज भी पहुंच रहा है वह अत्यंत भयानक और नाशक है। इससे भी अधिक दुखद बात यह है कि इन ताकतों ने अपने चंगुल में फँसी हुई अत्याचार सहन करने वाली कौमों को हर क्षेत्र में दूसरे पर आश्रित तथा दलित और पिछड़ा रख-कर केवल खाने और खर्च करने वाली कौम बना दिया है। हम लोगों को अपनी प्रगतियों से तथा शैतानी शक्तियों से इतना भयभीत कर दिया है कि हमारे अंदर किसी शोधकार्य को हाथ लगाने का साहस भी शेष नहीं रहा। हमने अपना सब कुछ उनके हवाले करके अपने और अपने देश की बागडोर उनके हाथों में दे दी। और आँख कान बंदकर उनके हुक्म के गुलाम और आज्ञाकारी बने हुए हैं। यही बनावटी तुच्छता और मूर्खता इस बात का कारण बनी हुई है कि हम किसी संदर्भ में अपने विचार और अपनी बुद्धि पर भरोसा न करें। और केवल पूरब और पश्चिम की अंधाधुन पैरवी करते रहें। अगर सभ्यता, साहित्य, औद्योगिक और खोज कार्य की कुशलता के क्षेत्र में हमारे पास कुछ जीते जागते नमूने थे, तो संस्कृति और साहित्य से वंचित पूरब और पश्चिम के उपासक लेखकों और प्रचारकों ने उसे आलोचना, हँसी-मज़ाक का निशाना बनाकर हमारी स्थानीय विचारशक्ति का सर कुचल कर हमें हताश कर दिया। और आज भी यह काम चालू है। दूसरों के स्वभाव तथा रीति-रिवाज चाहे कितने ही सम्मान-रहित और मूर्खतापूर्ण क्यों न हों अपनी बातचीत और अपने अमल से इसकी प्रशंसा के पुल बांधकर दूसरी कौमों को इसे अपनाने पर विवश कर दिया और कर-रहे

हैं। उदाहरण के रूप में अगर किसी किताब, आलेख अथवा भाषण में युरोपीय भाषा के कुछ शब्द आ जायें तो उसके भावार्थ पर ध्यान दिए बगैर ही बड़ी आश्चर्यता के साथ उसे मान लेते हैं। और उस लेखक या प्रवक्ता को ज्ञानी और बुद्धिजीवी समने लगते हैं। गोद से समाधि तक जिस चीज़ को देख लीजिए अगर उसका नाम पूर्वी या पश्चिमी ढंग पर रखा गया है तो वह हरेक को आकर्षित कर लेता है। और उसे प्रगति तथा सभ्यता का प्रतीक समझा जायेगा। और अगर खुद उनकी स्थानीय जुबान का प्रयोग किया गया हो तो उसे रूढ़िवाद और पिछड़ेपन का नाम देकर ठुकरा दिया जायेगा। हमारे बच्चों के नाम अगर पश्चिमीढंग के हों तो वो सर्वोत्तम और गौरवशाली है परन्तु यदि स्थानीय ढंग के नाम हो तो वो शर्मिन्दा और पिछड़े हुए हैं। सड़कें, गलियाँ दुकानें, कंपनियाँ दवाखाने पुस्तकालय कपड़े और अन्य दूसरी चीजें चाहे वो देश के अन्दर ही क्यों न हों उनके नाम विदेशी अवश्य होने चाहिए ताकि जनता खुश रहे और लोग उसका भरपूर स्वागत करें। उठना बैठना तथा सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में सर से पैर तक युरोप की पैरवी करना गर्व श्रेष्ठता और प्रगति और सभ्यता की निशानी है। और इसके मुकाबले स्वयं अपने रीति रिवाज तथा रहनसहन को रूढ़िवाद और पिछड़ेपन की निशानी समझा जाता है। हर प्रकार की बीमारी के इलाज के लिए चाहे वो कितनी ही साधारण हो और देश के अंदर उसका इलाज उपलब्ध ही क्यों न हों बाहर जाना तथा अपने देश के डाक्टरों और विद्वानों को निराश करना आवश्यक है। ब्रिटेन फ्रांस, अमेरिका, और मास्को की यात्रा को गर्व और सम्मान की दृष्टि से देखना, परन्तु हज तथा अन्य पवित्र स्थानों की तीर्थ-यात्रा करना, रूढ़िवाद और पिछड़ेपन का सबूत है। धर्म और धार्मिक चीज़ों का निरादर करना, बुद्धिजीवी और सभ्य होने की पहचान है। और इसके विपरीत धर्मिक चीज़ों का सम्मान करना और उनसे वफादारी करना पिछड़ेपन और रूढ़िवादी होने की पहचान है।

मैं यह नहीं कहता कि हमारे पास सब कुछ मौजूद है। जाहिर सी बात है कि हमें निकट भूतकाल के लंबे इतिहास विशेष रूप से इन अन्तिम शताब्दियों में हर प्रकार की प्रगति तथा उन्नति से वंचित रखा गया है। पहलवी खानदान के भ्रष्ट शासकों और विशेष रूप से शाही हुकूमत के प्रचार केन्द्रों ने देश में होनेवाली पैदावार के विरूद्ध प्रोपागंडे और अपने को तुच्छ व हीन समझकर हमें हर प्रकार की उन्नति तथा उन्नतिशील प्रयत्नों से वंचित कर दिया। देश की प्रगति के मार्ग में बाधा उत्पन्न करने के लिए विदेशी चीज़ों के आयात का दरवाज़ा खोल दिया गया। स्त्रियों पुरूषों विशेष रूप से देश के युवक वर्ग को विदेशों से आयात किए गए बनाव सिंगार के सामानों तथा बच्काना खेलों में उलझा दिया गया। ज़्यादा से ज़्यादा खर्च करने के संबंध में विभिन्न परिवारों का मुकाबला और उन्हें केवल खाने और खर्च करने का आदी बनाने की दुखद कहानी खुद अपनी जगह पर एक महन दुखद घटना के समान है। नौजवान जो समाज के सक्रिय सदस्य होते हैं उन्हें ना-ना प्रकार की बुराइयों और अय्याशियों के अड्डे बनाकर तबाह किया। इसी प्रकार की अनगिनत योजनाबद्ध मुसीबतें हैं जिनका ध्येय देशों की प्रगति के मार्ग में रूकावट पैदा करना है।

मैं ईरानी कौम से बड़ी विनम्रता और हमदर्दी के साथ वसीयत करता हूँ कि अब जबकि बड़ी हद तक ऐसे बहुत से हथकण्डों से मुक्ति प्राप्त हो चुकी है। और मौजूदा पीढ़ी मेहनत और कोशिश और नित नई खोज के लिए उठ खड़ी हुई है, और हम देख रहे हैं कि बहुत से कल-कारख़ाने यहाँ तक कि अति-आधुनिक हवाई-जहाज़ के दुर्लभ पुर्ज़े और कुछ दूसरी अन्य चीजें जिनके बारे में यह सोचा भी नहीं जाता था कि ईरानी तकनीकी विशेषज्ञ उन्हें बना- और चला सकते हैं, इस विषय में हमने अपने हाथ पूरब और पश्चिम के आगे फैला रखे थे कि उनके विशेषज्ञ ही इन चीज़ों को संभाल सकते हैं आर्थिक नाकाबंदी और थोपे गए युद्ध के दौरान खुद हमारे देश के नोजवानों ने आवश्यकताओं को निगाह में रखते हुए आवश्यक पुर्ज़ों का उत्पादन किया। और दूसरे देशों से कम कीमत पर इन आवश्यक पुर्ज़ों के उत्पादन के द्वारा यह साबित कर दिया कि अगर हम चाहें तो यह काम भी कर सकते हैं। होशियार और चौकन्ने रहिए ताकि पूरब और पश्चिम से संबंधित सजनैतिक खिलाड़ी आपको अपने शैतानी-कुचक्रों के द्वारा इन अंतरराष्ट्रीय लुटेरों की तरफ मोड़ न सकें। अपने दृढ़-निश्चय, लगातार प्रयत्न के द्वारा दूसरों पर आश्रित व आधरित विचारों की जंजीर को काटने के लिए उठ खड़े होइए और यह जान लीतिए कि आर्य तथा अरब नस्ल रूसी, अमरीकी तथा युरोपीय नस्ल से किसी प्रकार भी कम नहीं है। यदि वो अपने-आप को दूढ लें और निराशा से अपना दामन छुड़ा लें तथा दूसरों से उम्मीद लगानाछोड़ दें तो कुछ समय में हर चीज़ बनाने और हर काम करने की शक्ति इसमें मौजूद है और आप ही जैसे इंसान प्रगति की जिस सीमा तक पहुँचे हैं वहाँ तक आप भी पहुँच सकते हैं। बस शर्त यह है कि अल्लाह पर भरोसा रखिये और अपने आप पर विश्वास कीजिए, दूसरों पर आश्रित और आधारित होने का तरीका छोड़ दीजिए तथा दूसरे विदेशी शक्ति की गुलामी से मुक्ति पाने और सम्मानपूर्ण जिन्दगी प्राप्त करने के लिए हर प्रकार की कठिनाइयाँ सहन कीजिए।

आधुनिक तथा आने वाली पीढ़ी की हुकूमतों और उसके जिम्मेदार अफ़सरों का कर्तव्य है कि वो अपने विशेषज्ञों का सम्मान करें और आर्थिक तथा नैतिक सहायता के द्वारा उनका हौसला बढ़ाएं और उन्हें लगातार कोशिश में लगे रहने पर तैयार करें तथा नाशक व खर्चीली वस्तुओं के आयात पर प्रतिबंध लगा दें। और जो कुछ अपने देश में मौजूद है उसी से संतोश करें। यहाँतक कि हर चीज़ का उत्पादन वो स्वयं करने लगें।

जवान लड़कों और लड़कियों से मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि स्वतंत्रता, आज़ादी तथा मानवता के श्रेष्ठ आधारों को अय्याशी तड़क-भड़क और बुराई के अड्डों पर हाजिरी पर कुर्बान न करें जिनकी तरफ पश्चिमी देशों और उनके देशद्रोही एजेंण्ट तुम्हें बुलाते हैं चाहे इस राह में तुमको बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना ही क्यों न करना पड़े। क्योंकि जैसा कि तजुर्बे से साबित हो चुका है उनका परम उद्देश्य तुम्हें, तबाह-ओ-बरबाद करना और अपने देश के भाग्य से तुम्हें लापरवाह बनाए रखना, तुम्हारे ख़ज़ानों को लूटना तुम्हें साम्राज्यवाद पर आधारित असम्मानित जिन्दगी की जंजीरों में जकड़ना तथा तुम्हारे देश व देशवासियों को खर्चीला बनाना है। ये लोग

अपने इन हथकंड़ों तथा इसी प्रकार की दूसरी चीज़ों के द्वारा तुम्हें प्रगति से दूर तथा सामाजिक पिछड़ेपन का शिकार बनाए रखना चाहते हैं।

(च) जैसा कि मैंने पहले भी इशारा किया है और बार-बार कह चुका हूँ इनकी एक बड़ी साज़िश शिक्षा केन्द्रों विशेषरूप से युनिवर्सिटियों पर कब्ज़ा जमाना है क्योंकि हर देश के भाग्य का निर्माण इन्हीं उच्च शिक्ष केन्द्रों में शिक्षा पाने वालों से होता है। धार्मिक उलेमा तथा इस्लामी शिक्षा के केन्द्रों के संबंध में इनका तरीका स्कूलों और विश्वविद्यालयों से संबंधित नीतिविधियों से अलग है। इनकी योजना धार्मिक उलेमा को मार्ग से हटाकर उन्हें एकान्तप्रिय बना देना है।

इन शैतानी योजना को कार्यान्वित करने के लिए कभी दमन अत्याचार और बेइज़्ज़ती का प्रयोग किया जाता है, जैसा कि रज़ाखाँ के शासनकाल में हो चुका है। परन्तु इसका परिणाम उल्टा निकला और कभी शिक्षित और बुद्धिजीवी वर्ग को उलेमा से दूर करने के लिए निराधार प्रोपगंडे तथा शैतानी मनसूबों का सहारा लिया जाता है। रज़ा खान के शासनकाल में दमन व अत्याचार के साथ इस युक्ति का प्रयोग किया गया और मुहम्मद रज़ा के शासन में भी इस हथकंडे का प्रयोग किया जाता रहा लेकिन मुहम्मद रज़ा की राजनीति धोखे और मक्कारी से भरी हुई थी। युनिवर्सिटियों के संबंध में इनका मनसूबा यह है कि युवा पीढ़ी को अपने मानव आधारों तथा अपनी संस्कृति और सभ्याता से दूर करके पूर्वी या पश्चिमी संस्कृति का रसिया बना दें और इन्हीं के बीच से सरकारी कर्मचारियों का चयन करके देशों के भाग्यनिर्माण की बागडोर इन लोगों के हाथ में दे दें और अपने इन पिट्ठुओं के द्वारा हर देश में अपनी मनमानी करते रहें। ये देशद्रोही तत्व देश को तबाही और पश्चिमी सभ्यता की उपासना की तरफ खींच ले जाँय और धार्मिक उलेमा अपनी असफलता तथा एकांत प्रियता के कारण इन कुप्रथाओं की रोकथाम न कर सके। अपने चंगुल में दबोचे हुए देशों को प्रगति से दूर रखने तथा उन्हें तबाहों-बर्बाद करने का यह सर्वोत्तम तरीका है क्योंकि किसी प्रकार की कठिनाई और मेहनत तथा कौमों के विरोध व विद्रोह के बग़ैर सारी पूँजी महाशक्तियों की जेब में पहँच जाएगी अतः आज जबकि कालेज व युनिवर्सिटियों का सुधार किया जा रहा है और उन्हें पवित्र किया जा रहा है; जिम्मेदार लोगों की सहायता करें और युनिवर्सिटियों और उच्च शिक्षाकेन्द्रों को गुमराही से सदा के लिए सुरक्षित कर लें। और जहाँ कहीं वास्तविक राह से हटने का समाचार मिले उसके सुधार के लिए तुरंत कदम उठाएँ। और यह महान कर्तव्य प्रथम चरण में स्वयं युनिवर्सिटियों और कालेजों के जवान अपने ताक़तवर हाथों से करें क्यों कि अतिक्रमता से युनिवर्सिटियों की मुक्ति वास्तव में देश और देशवासियों की मुक्ति है।

मैं प्रथम चरण में तमाम नवयुकों और युवकों से, दूसरे चरण में उनके अभिवाहकों से और तीसरे चरण में हुकूमत के जिम्मेदार अफ़सरों और देश के शुभचिन्तक बुद्धिजीवियों से वसीयत करता हूँ कि इस महत्वपूर्ण मामले में, जो आपके देश को खतरों से सुरक्षित करने का साधन है, जानतोड़ कोशिश कीजिए और युनिवर्सिटियों को आने वाली पीढ़ियों के हवाले कीजिए। और एक के बाद दूसरी आने वाली पीढ़ियों से

वसीयत करता हूँ कि स्वयं अपनी और अपने देश की और अपने मानवता प्रेमी इस्लाम धर्म की मुक्ति के लिए युनिवर्सिटियों को पूरब व पश्चिम की उपासना तथा विभिन्न अतिक्रमताओं से सुरक्षित रखिए। और अपने इस इस्लामी तथा इन्सानी कर्तव्य के द्वारा अपने देश से महाशक्तियों के हाथों को काटकर उन्हें हताश कर दीजिए। ईश्वर आपकी सुरक्षा और सहायता करें।

(छ) मजलिसे-शकूरा-ए-इस्लामी (parliament) के सदस्यों को अपने दृढ़ निश्चय और संकल्प पर बाकी रहना एक महत्वपूर्ण कार्य है। हम देख चुके है कि इस्लाम और ईरान देश ,संवैधानिक क्रान्ति के बाद से अपराधी पहलवी हुकूमत के दौर तक हर जमाने से ज़्यादा ख़तरनाक और बदत्तर इस गंदी और अत्याचारी हुकूमत के चुग में अतिक्रमणकारी और दुष्ट पार्लियामेंट के हाथों कितनी दुखद कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। और विदेशी शक्तियों के इन तुच्छ और हीन एजेण्टों के हाथों देश और देश की जनता को कैसी जान लेवा कठिनाइयों का बोझ उठाना पड़ा है। इन पचास वर्षों के दौरान पार्लियामेण्ट की एक मज़लूम अल्प संख्यक टुकड़ी के कारण ब्रिटेन, रूस और बाद में अमेरीका ने एजेण्टों के द्वारा मनमाने काम किए और देश को तबाही और बर्बादी के कगार तक पहुँचा दिया। संवैधानिक क्रान्ति के बाद कभी भी संविधान के महत्वपूर्ण कानूनों पर अमल नहीं हुआ। यही कारण है कि रज़ा खान से पहले मुट्ठीभर पश्चिम उपासकों, बड़े-बड़े जमींदारों के द्वारा और पहलवी शासनकाल में इस अत्याचारी हुकूमत और उसके एजेण्टों द्वारा देश को कितने बड़े बड़े नुक़सानों का सामना करना पड़ा। आज ईश्वर की महान कृपा और गौरवशाली ईरान की जनता की हिम्मत से देश की तक़दीर स्वयं जनता के हाथों में आ गई है और पार्लियामेण्ट के सदस्य हुकूमत और ज़मींदारों के हस्तेक्षेप के बिना, स्वयं जनता के बीच से उन्हीं के द्वारा निर्वाचित होकर इस्लामी पार्लियामेण्ट में पहुँचे है। ऐसी अवस्था में उम्मीद है कि इस्लाम और देश के हितों से जिनकी वफ़ादारी निगाह में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि हर प्रकार की दुबराइयों की रोक थाम हो सकेगी।

आज और भविष्य के लिए जनता से मेरी वसीयत यह है कि अपने अटल इरादे और इस्लामी आदेशों व देश के हितों से वफ़ादारी के द्वारा चुनाव के हर युग में ऐसे ही लोगों को पार्लियामेण्ट में भेजें जो इस्लाम और इस्लामी गणतंत्र के वफ़ादार हो। और इस प्रकार के लोग आमतौर से समाज के मध्य तथा निचले वर्ग से मिलते हैं। इसके अतिरिक्त निर्वाचित सदस्य सच्चे मार्ग से अलग हटकर पूरब और पश्चिम की तरफ आकर्षित न हों और अतिक्रमणकारी शिक्षित तथा इस्लामी राजनीति और मौजूदा हालात से बाख़बर हों।

सम्मानित उलेमा जमाअत ख़ासतौर से महान धार्मिक नेताओं से वसीयत करता हूँ कि सामाजिक समस्या विशेष रूप से राष्ट्रपति और पार्लियामेण्ट के चुनाव जैसे महाने कार्यों से अलग न रहें। आप सब ने देखा और आने वाले पीढ़ी भी सुनेगी कि पूरब और पश्चिम की पैरवी करने वाले राजनैतिक खिलाड़ियों ने उन उलेमा को मैदान से बाहर कर दिया है जिन्होंने बड़ी मेहनत और कठिनाई से संवैधानिक क्रान्ति की बुनियाद

रखी थी। और उलेमा भी इन राजनैतिक खिलाड़ियों के धोखे में आकर देश और मुसलमानों की समस्याओं में हिस्सा लेने को अपनी शानो-शौकत के खिलाफ समझने लगे और मैदान पश्चिम उपासकों के हवाले करके संवैधानिक क्रान्ति संविधान तथा देश और इस्लाम को इतना बड़ा नुकसान पहुँचाया जिसकी पूर्ति के लिए एक लंबी मुद्दत आवश्यक है। खुदा का शुक्र है कि आज रूकावटें खत्म हो चुकी है। हर वर्ग के लोगों के हस्तक्षेप के लिए आज़ाद वातावरण स्थयापित हो चुका है। ऐसे वातावरण में मुसलमानों के मामलात के तरफ से लापरवाही उन बड़े अपराधों में से है जिनको क्षमा नहीं किया जा सकता अतः हर आदमी का परमकर्तव्य है कि वह अपनी शक्ति और अपनी कार्यक्षमता के मुताबिक इस्लाम और मुसलमानों की सेवा करें और दृढ़ संकल्प तथा सद्भावना के साथ क्षेत्रों साम्राज्यवादी ताकतों तथा पूर्व व पश्चिम उपासक तत्वों और इस्लाम के रास्ते से अलग हटे हुए लोगों के प्रभाव को रोकने की कोशिश करें। याद रखें कि इस्लाम और इस्लामी देशों की दुश्मन यही अंतर्राष्ट्रीय लुटेरी महाशक्तियाँ धीरे-धीरे हमारे और अन्य इस्लामी देशों के बीच बड़ी चतुराई के साथ फूट पैदा करने की कोशिश करेंगी और खुद इन्हीं देशों के लोगों के द्वारा कौमों को अपने शोषणकारी जाल में फँसाने का प्रयत्न करेगी। अतः पूरी होशियारी के साथ देख रेख करनी चाहिए। और फूट तथा विरोध का आभास होते ही उसके मुकाबले के लिए खड़े हो जाइए और उन्हें मौका न दीजिए। ईश्वर आपकी सुरक्षा और सहायता करें।

मौजूदा और आने वाले युगों की पार्लियामेण्ट के सदस्यों से प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर न करे कभी अतिक्रमणकारी लोग षड़यंत्र, झूठ, मक्कारी और राजनैतिक हथकंडों के द्वारा जनता पर अपना नेतृत्व थोप दें तो पार्लियामेण्ट को चाहिए कि वो ऐसे लोगों के चुनाव को रद्द कर दे। और विदेशी शक्तियों पर आश्रित किसी भी नाशकारी को पार्लियामेण्ट में घुसने न दें।

देश के कानूनी धार्मिक अल्प संख्यक वर्ग के लोगों से वसीयत करता हूँ कि पहलवी शासन से उन्होंने जो अनुभव हासिल किया है उसे कदापि न भूलें और पार्लियामेण्ट के लिए ऐसे प्रतिनिधि का चुनाव करें जो अपने धर्म और इस्लामी गणतंत्र का वफ़ादार हो, दुनियाँ को हड़पने वाली ताक़तों पर आश्रित या नास्तिक तथा अतिक्रमणकारी विचारधारा से जुड़ा हुआ न हो। मैं पार्लियामेण्ट के तमाम सदस्यों से अपील करता हू कि अपने तमाम साथियों के साथ पूरी सद्भावना, प्रेम, भाईचारे के साथ व्यवहार करें। और सब मिल जुलकर यह कोशिश करें कि ईश्वर न करे देश का कानून इस्लामी आदेशों से अलग हो जाय। आप सभी लोग इस्लाम और उसके दैवी ओदेश के वफ़ादार रहें ताकि आपको इस दुनियाँ और परलोक की नेकी प्राप्त हो सके।

देश के संविधान की निगरानी करने वाली कमेटी मजलिसे-शूरा-ए-निगहबान से प्रार्थना और वसीयत करता हूँ कि चाहे उसका संबंध मौजूदा नस्ल से हो या आने वाली नस्ल से, पूरे ध्यान और पूरे ताक़त के साथ अपने राष्ट्रीय और इस्लामी कर्तव्य का पालन करे और किसी भी ताक़त से प्रभावित न हों। और किसी किस्म की दया

किए बग़ैर पवित्र शरीयत और संविधान के आदेशों का पालन और उनकी सुरक्षा करें और देश की आवश्यकताओं को जो कभी दूसरी श्रेणी के निर्देश और कभी विलायते-फ़कीह के आदेशों के अनुसार पूरी की जाती हैं, अपनी निगाह में रखें और अपनी सम्मानित व सहनशील जनता से मेरी वसीयत यह है कि हरेक चुनाव में चाहे वह राष्ट्रपति का चुनाव हो या पार्लियामेण्ट के प्रतिनिधित्व का और चाहे लीडरशिप कौंसिल या नेता के चयन के लिए खुब्रगान (मुश्ताहिद-कौंसिल) का, चुनाव हो हर मौके पर मैदान में डटे रहें और लोगों का चुनाव करते समय उन आदेशों व नियमों का पालन करें जिन्हें पार्लियामेण्ट की सदस्यता के लिए शर्त माना गया है। उदाहरण के लिए नेता या नेतृत्व कौंसिल की स्थापना के लिए चुने जाने वाले विशेषज्ञों (मुजतहदीन कौंसिल के सदस्यों) के चयन के संबंध में पूरी तरह सचेत रहें क्योंकि यदि भूलचूक से काम लेते हुए विशेषज्ञों को धर्मशास्त्र कानूनी आधार के अनुसार नही चुना तो संभव है कि इस्लाम व इस्लामी देश को ऐसी महान क्षति का शिकार होना पड़े जिसकी पूर्ति संभव न हो। ऐसी स्थिति में खुदा-वन्दे आलम के सामने सभी लागों को जवाबदे होना पड़ेगा और यही हाल जनता की अलहदगी और हस्तेक्षप से उसके विरोध का है। इसमें बड़े बड़े उलेमा से लेकर व्यापारी किसान मज़दूर सरकारी कर्मचारी सभी शमिल हैं इस्लाम और देश के निर्माण के सिलसिले में सभी लोग उत्तरदायी हैं, चाहे मौजूदा कौंसिल की बात हो या आने वाली कौंसिलों की और शायद कुछ हालात में लापरवाही और हस्तक्षेप से अलहदगी एक ऐसा गुनाह है जो तमाम गुनाहों से बड़ा है अतः बीमारी का इलाज उसके प्रकट होने से पहले ही कर लेना चाहिए वरना मामला सबके हाथों से निकल जाएगा। यह एक ऐसी वास्तविकता है जिसे संवैधानिक-स्वतंत्रता के बाद हम सब ने महसूस कर लिया है। इससे अच्छा कोई और इलाज नहीं है कि पूरे देश के लोग अपनी ज़िम्मेदारियों को संविधान और इस्लामी कानून के अनुसार पूरी करें। राष्ट्रपति और पर्लियामेंण्ट के सदस्यों का चुनाव करते समय ऐसे जिम्मेदार बुद्धिजीवी लोगों से सलाह करें जो मौजूदा हालात से परिचित हों, शोषणकारी शक्तियों और देशों से संबंधित न हो, इस्लाम और इस्लामी गणतंत्र के वफ़ादार हों और ईश्वर से डरते हों इसी तरह ईश्वर से डरने वाले और इस्लामी गणतंत्र के वफ़ादार उलेमा से सलाह करें और और याद रखें कि राष्ट्रपति और पार्लियामेण्ट के सदस्य उस वर्ग से संबंध रखते हों जिन्हें समाज के कमज़ोर तथा दलित वर्ग के लोगों की परेशानी और मजलूमियत का एहसास हो। और जिन्हें इन लोगों की भलाई का पूरा-पूरा ध्यान हो, वो पूँजिपति ऐशोआराम और विलासिता में डूबे हुए वर्ग के लागों से संबंध न रखते हों क्यों कि ऐसे लोग भूखों और गरीबों की परेशानी तथा उनके दुखदर्द की कड़वाहट को महसूस ही नहीं कर सकते। हमें यह भलि-भाँति जान लेना चाहिए कि राष्ट्रपति और पार्लियामेण्ट के सदस्यगण इस्लाम के वफ़ादर देश तथा देशवासियों के शुभ चिंतक और सज्जन लोग हों तो बहुत सी कठिनाइयाँ और परेशानियाँ पैदा ही न होंगी। और अगर कोई कठिनाई हुई भी तो वह जल्दी ही दूर हो जायेगी और नेता या नेतृत्व कौंसिल की विशेषता को ध्यान में रखते हुए उसकी स्थापना के लिए विशेषज्ञों के चुनाव में भी इन्ही बातों का पालन किया जाय। और वशेषज्ञों के चुनाव में ध्यानपूर्वक तथा हर युग के महानधार्मिक नेता, सम्मानित उलेमा तथा ज़िम्मेदारी महसूस करने वाले धर्मिक

बुद्धिजीवियों की सलाह से काम लिया जाय। यदि विशेषज्ञों की कौंसिल जिसका चुनाव आम जनता द्वारा किया जाता है- का चुनाव करते समय ध्यानपूर्वक काम किया जाय तथा हर युग के श्रेष्ठ धार्मिक नेता तथा उत्तरदायी धार्मिक बुद्धिजीवी लोगों की सलाह से काम किया जाय तो नेता पद अथवा नेतृत्व करने वाले व्यक्ति के चुनाव में किसी प्रकार की कठिनाई पैदा होने का सवाल ही नहीं पैदा होता। और यदि कोई कठिनाई हुई भी हो तो वह बड़ी आसानी से दूर भी हो जायेगी। संविधान की दफा 110 तथा 11 को देखने से विशेषज्ञों तथा नेता या नेतृत्व कौंसिल के चयन में सदस्यों की महान जिम्मेदारी का पता चलता है। कि चुनाव में मामूली सी चूक या लापरवाही इस्लाम, देश तथा इस्लामी गणतंत्र को कितनी क्षति पहुंचायेगी। अतः यदि इसका तनिक भी संदह हो तो इसका चुनाव करने वाले सदस्यों का उत्तरदायित्व बढ़ जाता है।

यह ज़माना वास्तव में इस्लाम और इस्लामी गणतंत्र की आड़ में इस्लाम के ऊपर बड़ी ताकतों तथा उनके देशी तथा विदेशी लोभी ऐजेन्टों के आक्रमण का ज़माना है। अतः इस युग के नेता अथवा नेतृत्व कौंसिल से मेरी वसीयत है कि वह स्वयं को इस्लाम, इस्लामी गणतंत्र तथा कमजोर एवं दलित वर्ग की सेवा के लिये वक़्फ कर दे और यह न सोचे कि नेता का पद उनके लिये कोई मूल्यवान उपहार या ऊँची पदवी है बल्कि यह इतना महान तथा खतरनाक कर्तव्य है कि यदि इस कर्तव्य का पालन करते समय अपनी इच्छा या आकांक्षा की बुनियाद पर कोई भूल हो जाय तो इस दुनियाँ में सदैव बाकी रहने वाले अनादर के अतिरिक्त उसे भविष्य में दैवी प्रकोप की आग का सामना करना होगा। मानवता का मार्गदर्शन करने वाले ईश्वर से बड़ी विनम्रता के साथ मेरी प्रार्थना है कि हमें और आपको इस भयानक इम्तिहान में सफलता प्राप्त करने की भी क्षमता प्रदान करे। तथा हमें मुक्ति और मोक्ष भी प्रदान कर दे। कुछ कमी के साथ यही खतरा वर्तमान और भविष्य के राष्ट्रपति, मंत्रिमंडल के सदस्यों तथा हुकूमत के अन्य पदाधिकारियों के लिए उनकी जिम्मेदारियों और पदों के अनुसार मौजूद है। अतः इन्हें चाहिए कि वे खुदा बन्दे आलम को अपना निरीक्षक जानें। और स्वयं को सदैव ईश्वर के समक्ष महसूस करें। ईश्वर इन सब की कठिनाईयों को दूर करे।

(ज) एक और महत्वपूर्ण समस्या न्याय की समस्या है, जिसका आम जनता की जानमाल और इज़्ज़त से गहरा संबंध है। नेता और नेतृत्व कौंसिल से मेरी वसीयत यह है कि अदालत के उच्चपदाधिकारियों की नियुक्ति करते समय ऐसे लोगों को नियुक्त करने की कोशिश करें जो इस्लामी तथा राष्ट्रीय समस्याओं तथा राजनैतिक मामलों को भलिभाँति समझते हों तथा जिम्मेदारी का एहसास रखते हों। और बीते हुए दिनों में पाक-साफ जिन्दगी के मालिक हों। उच्च अदालती-कौंसिल (उच्चतम न्यायालय) से भी मैं यह माँग करता हूँ कि न्याय संबंधी समस्याओं को ध्यानपूर्वक हल करे क्योंकि पिछली हुकूमत के ज़माने में न्यायालयों ने बड़ा दुखद रूप धारण कर लिया था। अतः इस अहम पद की तरफ उन लोगों को फटकने भी न दिया जाना चाहिए जो आम जनता के जानमाल तथा उसकी मान मर्यादा से खेलते हैं और इस्लामी न्याय को तनिक भी महत्व नहीं देते हैं। लगातार कोशिश तथा ध्यानपूर्वक धीरे-धीरे न्यायालय के कार्यों में परिवर्तन लाएँ और हर प्रकार से उचित न्यायाधीशों को उन न्यायाधीशों के

स्थान पर नियुक्त करें जो इस्लाम के बनाए गए नियमों और आदेशों की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। ताकि इंशा-अल्लाह शीघ्र ही पूरे देश में इस्लामी न्यायप्रणाली भली-भाँति प्रचलित हो जाय। ऐसे न्यायधीश धार्मिक-शिक्षाकेन्द्रों विशेषतयः धार्मिक शिक्षा संस्थान, 'कुम' में शिक्षा-दिक्षा प्राप्त करते हैं और इसी संस्थान से उनकी योग्यता प्रमावित की जाती है।

वर्तमान युग तथा भविष्य के सम्मानित न्यायधीशों से वसीयत करता हूँ कि न्याय के संबंध में मासूमीन (अलै॰) की अहादीस और न्याय संबंधी परंपराओं को निगाह में रखते हुए इस महान एवं भयानक पद को स्वीकार करें और इसे अयोग्य लोगों के हाथ में न जाने दें। जो लोग इसके योग्य हैं वो इस पद से दूर न भागें और अयोग्य लोगों को इस मैदान में न घुसने दें। याद रखिए जिस प्रकार ये पद बड़े खतरे से जुड़ा हुआ है उसी तरह से इसका पुण्य (सवाब) भी ज़्यादा है और सब जानते हैं कि इस ओहदे का ग्रहण करना उन लोगों का परम-कर्तव्य है जो इसके योग्य हैं।

(छ) धर्म-शास्त्र के पवित्र केन्द्रों से मेरी वसीयत वही है जिसका मैं बार-बार उल्लेख कर चुका हूँ। कि इस युग में इस्लाम और इस्लामी गणतंत्र के विरोधी इस्लाम को मिटाने पर तुले हुए हैं और हर संभव प्रयत्न से अपनी इस शैतानी योजना को पूरा करने की चेष्टा कर रहे हैं। इनके नापाक मक़सदों में से एक बहुत महत्वपूर्ण मक़सद नाशकारी तत्वों को धार्मिक शिक्षा केन्द्रों में दाखिल करना है और ये बात इस्लामी शिक्षा केन्द्रों के लिए ही नहीं बल्कि इस्लाम धर्म के लिए भी बहुत खतरनाक है। सबसे भयानक खतरा ऐसे तत्वों के कुकर्मों तथा दुर्व्यवहारों के कारण इन शिक्षा संस्थानों की बदनामी है। और इसका दीर्घकालीन खतरा यह है कि यही धोखेबाज लोग उच्च पदों पर पहुँच जायें और इस्लामी शिक्षा में निपुणता हाँसिल करके फिर पवित्र हृदयवाली जनता के बीच अपनी जगह बना ले और उन्हें अपना उपासक बनाकर उचित समय पर देश इस्लामी शिक्षा केन्द्र तथा इस्लाम धर्म पर गहरी चोट लगा दे। आप लोगों को मालूम है कि बड़ी तथा लुटेरी शक्तियाँ समाज के विभिन्न वर्गों में देशप्रेमियों जाली बुद्धिजीवियों तथा धार्मिक नेताओं के रूप में- कि यदि इस अंतिम वर्ग को अवसर मिल जाय तो यह सबसे ज़्यादा भयानक होगा- अपने ऐजेंटों का एक बड़ा भण्डार एकत्र किए रहती हैं। और ये लोग कभी-कभी तीस- चालीस साल तक बड़े संयम के साथ इस्लामी रीति-रिवाज के अनुसार राष्ट्रप्रीयता के नारों के साथ आम जनता के बीच पवित्र जीवन व्यतीत करते हैं। और उचित अवसरों पर अपना काम कर बैठते हैं। और हमारे देश के लोगों ने क्रान्ति के पश्चात इस थोड़े से समय में "मुजाहिदे-खल्क", "फ़िदाई-ए-खल्क" "तूदह" तथा अन्य दूसरे शीर्षकों से इस प्रकार के नमूने देखे हैं। आवश्यक है कि हम सब पूरी होशियारी के साथ षड़यंत्रों को असफल बनाएं। और इस संबंध में सबसे ज्यादा आवश्यक धार्मिक शिक्षा-केन्द्र हैं। जिनकी पवित्रता तथा अनुशासन को कायम रखना श्रेष्ठ धार्मिक नेताओं की सहायता से सम्मानिक शिक्षक गण तथा अन्य निष्ठावान धार्मि-नेताओं की ज़िम्मेदारी है। और यह

कहावत कि "अनुशासनहीनता में ही हमारा अनुशासन है" संभवतः इन्हीं षड्यंत्रकारियों की देन है।

बहरहाल मेरी वसीयत यह है कि हर युग में विशेषतः वर्तमान युग में जबकि दुश्मन की चालों और उनके षड्यंत्रों में तेज़ी और शक्ति आ गई है धर्मिक शिक्षा केन्द्रों को पूरी तरह संगठित करना आवश्यक है। सुयोग्य शिक्षकगण तथा धार्मिक नेता और उलेमा अपना समय खर्च करके उचित और विस्तृत योजना बनाकर धार्मिक शिक्षाकेन्द्रों विशेष रूप से 'कुम' धार्मिक शिक्षा-केन्द्र और अन्य केन्द्रों की रक्षा करें। आवश्यक है कि सम्मानित उलेमा और शिक्षकगण धर्मशास्त्र से संबंधित पाठों और धर्मशास्त्र के शिक्षा केन्द्रों में अपने सम्मानित पूर्वजों की कार्यप्रणाली में परिवर्तन न आने दें क्योंकि इस्लामी धर्मशास्त्र की सुरक्षा का केवल यही रास्ता है। और कोशिश करें कि आदेशों तथा शोध कार्यों के संबंध में दिन प्रतिदिन प्रगति होती रहे और "परंपरागत धर्म-शास्त्र" जो हमारे नेक पूर्वजों की मीरास है और जिससे दूर हटकर चलना शोधकार्य के स्तंभों को कमज़ोर कर देगा, इसकी सुरक्षा की जांच और लगातार शोधकार्य की प्रगति होती रहे तथा इसके साथ ही साथ इस्लाम और देश की आवश्यकताओं को निगाह में रखते हुए शिक्षा और ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों के लिए भी योजना बनाई जाय और इन विषयों के विशेषज्ञों को ट्रेनिंग भी दी जाय। वास्तव में उच्चश्रेणी की शिक्षा जिसका प्राप्त करना सबके लिए आवश्यक है वो इस्लाम की रूहानी शिक्षाएँ हैं, जैसे व्यवहार का ज्ञान, आत्मा की पवित्रता तथा ईश्वर के रास्ते पर आगे बढ़ना और उसी की राह में मिट जाना ही सबसे बड़ा जिहाद है।

(ब) जिन चीजों का सुधार तथा उनकी पवित्रता और देखभाल आवश्यक है उनमें से एक कार्यपालिका और प्रशासन है। कभी ऐसा भी संभव है कि पार्लियामेंट समाज के लिए कोई लाभदायक और प्रगतिशील कानून पास करे। निगहबान कौंसिल (Council of Guardians) इसको मंज़ूरी दे दे और जिम्मेदार वज़ीर या मंत्री उसको कार्यान्वित करने की घोषणा भी कर दे, लेकिन जब वह अयोग्य अफसरों के हाथ में आए तो वो उसे काट-छाँट दे और कानून के विरूद्ध या दफ्तरी उल्झाव के द्वारा जिसके वो आदी बन चुके हैं, और जानबूझकर जनता को परेशान करने के लिए ग़लत कदम उठाकर धीरे-धीरे अपनी लापरवाहियों से हंगामा पैदा करवा दे।

इस युग तथा आने वाले समय के ज़िम्मेदार मंत्रियों से मेरी वसीयत यह है कि एक तरफ तो आप लोग मंत्रालयों के तमाम कर्मचारी जिस बजट से अपना खर्च पूरा करते हैं वो आम जनता का माल है और आप सबको देश की जनता विशेषतयः कमज़ोर व दलित वर्ग का सेवक होना चाहिए और धार्मिक दृष्टिकोण से जनता के लिए कठिनाइयाँ पैदा करना और सौंपे गए कर्तव्य के विरूद्ध काम करना हराम है। और ऐसी हरकत कभी-कभी दैवी प्रकोप का कारण बन जाती है। इसके साथ ही दूसरी तरफ आप सब लोग जनता की सहायता तथा आम लोगों के समर्थन पर आश्रित हैं। आम जनता विशेष रूप से कमज़ोर तथा दलित वर्ग की सहायता से ही हमें सहायता प्राप्त हुई और देश के प्राकृतिक ख़ज़ानों से तानाशाही को कोई सरोकार न रह गया।

अगर किसी दिन आप जनता के समर्थन से हाथ धो बैठे तो आप लोगों को इस बड़े पद से हटा दिया जाएगा और आपके स्थान पर अत्याचारी तानाशाही हुकूमत की तरह के निर्दयी अत्याचारी लोग इन पदों पर अपना अनाधिकृत कब्ज़ा जमा लेंगे। अतः इन स्पष्ट और महसूस की जाने वाली हकीकतों को ध्यान में रखते हुए आम जनता को प्रसन्न रखने की कोशिश कीजिए और इस्लाम तथा मानव विरोधी कार्यों से बचते रहिए और इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भविष्य में आने वाले तमाम गृहमंत्रियों से वसीयत करता हूँ कि वो गवर्नरों के चयन में पूरी छानबीन से काम लें। ताकि जिम्मेदारी महसूस करने वाले धार्मिक योग्य बुद्धिमान और जनता के साथ अच्छा वर्ताव करने वाले गवर्नरों से ज़्यादा शान्ति विश्वास और खुशहाली का वातावरण कायम हो सके। और यह याद रखना चाहिए कि वैसे तो तमाम मंत्रिमण्डलों के मंत्रिगण देश को इस्लामी बनाने तथा अपने काम को भलिभाँति पूरा करने के जिम्मेदारी है परन्तु कुछ मंत्रालय विशेष महत्व रखते हैं जैसे विदेश मंत्रालय जो देश के बाहर दूतावासों का जिम्मेदार है। मैंने क्रान्ति की सफलता के आरंभ ही से सभी विदेश मंत्रियों का ध्यान इस बात की तरफ आकर्षित किया है कि वो दूतावासों को शैतानी हरकतों से दूर रखते हुए ऐसा रूप दें जिसको देखकर यह पता चल सके कि ये इस्लामी गण्तंत्र ईरान का दूतावास है। लेकिन कुछ मंत्रियों ने या तो इस दिशा में कोई उचित कदम नहीं उठाया या फिर भलिभाँति सफलता नहीं पा सके। जबकि आज इस्लामी क्रान्ति की सफलता के बाद तीन साल बीत चुके हैं देश के मौजूदा विदेश मंत्री ने इस संबंध में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं और उम्मीद है कि दृढ़-निश्चय और मेहनत व लगन के साथ अगर यह कोशिश जारी रही तो यह महत्वपूर्ण काम भी पूरा हो जाएगा।

इस युग तथा भविष्य में आने वाले विदेश मंत्रियों से मेरी वसीयत यह है कि आप की जिम्मेदारी बहुत ज़्यादा है चाहे वह विदेश मंत्रालय और दूतावासों के सुधार और परिवर्तन का मामला हो चाहे विदेश नीति तय करने की बात हो, देश की भलाई और आज़ादी की सुरक्षा की बात हो या उन देशों से दोस्ताना संबंध बनाए रखने की बात हो जो हमारे देश के अन्दर हस्तेक्षेप का इरादा नहीं रखते, आप हर उस काम से अपने को पूरी तरह बचाए रखिए जिसकी वजह से किसी पर अथवा किसी प्रकार से आश्रित होने का शक भी पैदा हो सके। विश्वास कीजिए कि गुटबंदी हो सकता है कि देखने में बड़ी सुहावनी मालूम होती हो और यह भी मुमकिन है कि इस समय उससे कुछ फायदा भी हासिल होता हो। लेकिन याद रखिए कि आखिर में यह देश की बुनियादों को गिरा देगी। इस्लामी देशों से संबंध स्थापित करने और इनके शासकों को जागृत करने का प्रयत्न कीजिए। इसके साथ ही साथ इन्हें एकता और आपसी मेलजोल बनाए रखने के लिए आमंत्रित कीजिए। ईश्वर आपके साथ है।

इस्लामी देशों की जनता से मेरी वसीयत है कि आप इस इन्तेज़ार में न रहें कि कोई बाहर से आकर इस्लाम और इस्लामी आदेर्शों के प्रतिपालन के संबंध में आपके उद्देश्य को पूरा करने में आपकी सहायता करेगा। आप स्वयं इस महत्वपूर्ण एवं लाभकारी कर्तव्य की राह में, जो स्वतंत्रता और आत्म निर्भरता दिलाता है, ठोस कदम उठाएँ। इस्लामी देशों के बड़े-बड़े उलेमा तथा सुप्रसिद्ध प्रवक्ताओं का कर्तव्य है कि वो

हुकूमतों को बड़ी ताक़तों की ग़ुलामी से आज़ाद होने और अपनी जनता को आपसी मेलजोल बनाए रखने को आमंत्रित करें। ऐसी स्थिति में सफलता उनके कदम चूमेगी। राष्ट्रों को एकता की तरफ आमंत्रित करें। नस्ली भेदभाव-- जो इस्लामी शिक्षा के बिलकुल विरुद्ध है- से परहेज़ करें। वो जिस राष्ट्र के निवासी तथा जिस किसी नस्ल से भी संबंध रखते हों, अपने ईरानी भाइयों की तरफ दोस्ती और भाईचारे का हाथ बढ़ाएँ क्योंकि महान धर्म इस्लाम ने उन्हें एक दूसरे का भाई बनाया है। अगर खुदा वन्दे करीम की असीम कृपा तथा हुकूमतों और राष्ट्रों की हिम्मत से यह ईमानी भाईचारा कायम हो जाय तो आप देखेंगे कि मुसलमान दुनियाँ की सबसे बड़ी ताक़त बन जायेंगे। हम उस दिन के लिए आशा लगाए हुए हैं जब ईश्वर क इच्छा से संसार में यह भाईचारा और समानता स्थापित हो जाय।

धार्मिक उपदेशों का प्रचार करने वाले मंत्रालय से हर युग में विशेषतयः इस युग में मेरी यह वसीयत है कि शैतानी ताक़तों के मुक़ाबले में सच्चाई और इन्साफ का प्रचार करें और इस्लामी गणतंत्र के वास्तविक स्वरूप को दुनियाँ के सामने पूरी तरह प्रकट करने का भरसक प्रयत्न करें। आज इस युग में जबकि हम अपने देश से दुनियाँ की बड़ी ताक़तों के हाथ काट चुके हैं तथा बड़ी ताक़तों से संबंधित सभी जन संचार के साधनों का निशाना बने हैं, बड़ी ताक़तों से संबंधित प्रवक्ताओं और लेखकों ने इस नवोदित इस्लामी गणतंत्र पर कैसे-कैसे झूठे आरोप लगाए हैं और लगा रहे हैं। दुःख तो यह है कि इस्लामी क्षेत्र की अधिकतर हुकूमतें जिन्हें इस्लामी आदेश के अनुसार हमसे मित्रता तथा भाइचारे का संबंध स्थापित करना चाहिए था, हमसे तथा इस्लाम से शत्रुता तथा दुश्मनी पर कमर-बाँधे हुए हैं और अंतर्राष्ट्रीय लुटेरों की खुशी के लिए हर तरफ से हमारे ऊपर हमला कर रही हैं।

हमारी प्रचार शक्ति बहुत कम और कमज़ोर है। आपको मालूम है कि आज दुनियाँ प्रचार और प्रोपगंडे के बल पर चल रही हैं। और महान खेद का विषय है कि नाममात्र बुद्धिजीवी लोग जो दोनों ब्लाकों में से किसी एक से संबंधित हैं, अपने देश और देशवासियों की आज़ादी के लिए सोच विचार करने के बजाय अपने स्वार्थ से विवश होकर एक पल के लिए भी अपने देश और देशवासियों के फायदे की तरफ ध्यान नहीं देते। जबकि उन्हें देश तथा देशवासियों के हित को प्राथमिकता देनी चाहिए तथा इस इस्लामी गणतंत्र में पाई जाने वाली स्वतंत्रता का भूतपूर्व अत्याचारी शासनकाल से तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए। तथा विलासिता से रहित वर्तमान सज्जनता पूर्ण जीवन की पिछली सरकार की ग़ुलामी तथा अत्याचार से भरी हुई ज़िन्दगी से तुलना करते हुए वास्तविकता की परख करनी चाहिए। फिर इसके बाद इन नाम-मात्र बुद्धिजीवियों को चाहिए कि वो इस नवोदित इस्लामी गणतंत्र पर निरंतर आरोप लगाना बन्द कर दें और हुकूमत तथा देशवासियों के साथ एक पंक्ति में खड़े होकर अपनी लेखनी एवं वाणी के माध्यम से शैतानी तथा अत्याचारी शक्तियों का डटकर मुकाबला करें। प्रचार केवल प्रचारमंत्रालय की ही ज़िम्मेदारी नहीं है बल्कि तमाम बुद्धिजीवियों, प्रवक्ताओं, उपदेशकों लेखकों तथा कलाकारों का परम कर्तव्य है। विदेश मंत्रालय को चाहिए कि उनके दूतावास प्रचार साहित्य प्रकाशित करें तथा दुनियाँ के सामने इस्लाम

के प्रकाशमय स्वरूप को प्रकट करें। अगर यह चेहरा अपनी पूरी सुन्दरता के साथ- जिसकी तरफ कुर्आन और सुन्नत ने आमंत्रित किया है- ना समझ दोस्तों और इस्लाम दुश्मनों के नकाब के पीछे से सामने आ आय तो इस्लाम पूरे विश्व में फैल जायेगा और इसकी शानदार पताका सारी दुनियाँ में लहराने लगेगी। कितनी दुखद है यह बात कि मुसलमानों के पास एक ऐसी मूल्यवान संपत्ति हो जिसकी क्यामत तक कोई मिसाल पैदा होने वाली नहीं है लेकिन वो यह मूल्यवान मोती मानव संसार के सामने न ला सके बल्कि वो स्वयं भी इससे अनजान और अपरिचित है और कभी-कभी इससे दूर भागते हुए दिखाई देते हैं। जबकि संपूर्ण मानव जगत प्राकृतिक रूप से इस मूल्यवान सम्पत्ति को स्वीकार करने की इच्छा रखता है।

(त) अनेक महत्वपूर्ण समस्याओं में से एक प्राथमिक कक्षा से विश्व विद्यालय तक के शिक्षा केन्द्रों की समस्या है अतः इसकी असाधारण महत्वता को ध्यान में रखते हुए दुबारा इसकी ओर ध्यानाकर्षण कर रहा हूँ और इस संबंध में संकेतात्मक ढंग से कुछ बातें बयान करूँगा। ईरान की लुटी हुई कौम को यह जान लेना चाहिए कि इन अंतिम पचास वर्षों में ईरान तथा इस्लाम पर जिस चीज़ ने घातक प्रहार किया है उसका विशेष हिस्सा विश्वविद्यालयों से संबंधित रहा है। यदि विश्वविद्यालयों तथा दूसरे शिक्षाकेन्द्रों में इस्लामी तथा राष्ट्रवादी योजनाओं के अनुसार राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए बच्चों नवयुवकों तथा युवकों को शिक्षा के आभूषणों से विभूषित किया जाता तो हमारा देश ब्रिटेन और उसके बाद अमरीका तथा रूस के गले में कभी न पहुँचता। और देश-नाशक साथियों एवं समझौतों को इस कुचली हुई तथा अत्याचार से दबी हुए कौम पर कभी न थोपा जाता। ईरान की सीमा तक विदेशी सलाहकारों के कदम कभी न पहुँचते, इस अत्याचार सहन करने वाली कौम के प्राकृतिक खज़ानों तथा इसके काले सोने (तेल) को शैतानी ताक़तों की जेब में कभी न उँडेला जाता। पहलवी खानदान तथा उसके गुलामों को यह अवसर कभी न प्राप्त होता कि वो राष्ट्रीय संपत्ति को लूटकर देश के अंदर और बाहर मज़लूमों की लाशों के गढ़ पर ऊँचे-ऊँचे भवन तथा लंबे-चौड़े पार्कों का निर्माण करें और इन मज़लूमों की पूँजी से विदेशी बैंकों को भरकर अपनी तथा अपने समर्थकों की विलासिता पर खर्च करें। यदि हुकूमत, पार्लियामेण्ट, न्यायपालिका तथा अन्य महत्वपूर्ण संस्थानों का स्रोत इस्लामी तथा राष्ट्रीय विश्वविद्यालय होते तो आज हमारी कौम विनाशकारी समस्याओं में गिरफ्तार न होती। यदि पवित्र व्यक्तित्व वाले लोग वास्तविक रूप में न कि उस रूप में जिसे आज इस्लाम के मुकाबले में पेश किया जाता है- राष्ट्रीय तथा इस्लामी धारणा के साथ विश्वविद्यालयों से शिक्षा प्राप्त कर के राष्ट्र के तीनों महान संस्थानों (विधान पालिका, न्यायपालिका तथा कार्यपालिका) तक पहुँचते तो आज हमारा हाल कुछ और ही होता। हमारे देश के कमज़ोर एवं दलित लोग गरीबों की जंजीरों से आज़ाद होते, तानाशाही तथा अत्याचार का नाश हो चुका होता, विलासिता तथा नशीले पदार्थों के अड्डे- जो मूल्यवान तथा कर्मशील युवा पीढ़ी को तबाह करने के लिए काफी हैं, मिट चुके होते और देश तथा देशवासियों को तबाह करने वाली विरासत हमारी कौम के हिस्से में न आतीं। अगर युनिवर्सिटियाँ, इस्लामी, इन्सानी तथा राष्ट्रीय हितों की रक्षक होती तो सैकड़ों हज़ारों

शिक्षकगण समाज के हवाले कर चुकी होती। परन्तु कितने दुख की बात है कि हमारे विद्यालय और विश्वविद्यालय ऐसे लोगों के हाथों में थे और हमारे नवयुवक उन लोगों के हाथों ट्रेनिंग पा रहे थे, जिनमें एक मज़लूम तथा दलित अल्पसंख्यक शिक्षकों के अतिरिक्त सभी लोग पूरब और पश्चिम के पुजारी थे तथा एक सम्राज्यवादी योजना के अनुसार उन्हें विश्वविद्यालयों में शिक्षक की कुर्सी दी गई थी। और विवशतः हमारे नवयुवक बड़ी ताक़तों से संबंधित इन्ही भेड़ियों के निरीक्षण में परवरिश पाकर विधान पालिका न्यायपालिका तथा कार्यपालिका के उच्च स्थानों को ग्रहण करते थे अत्याचारी पहलवी हुकूमत के आदेशानुसार काम करते थे।

अब ईश्वर की कृपा से देश के तमाम विश्वविद्यालय एवं शिक्षा केन्द्र अपराधियों तथा अत्याचारियों के चंगुल से आज़ाद हो चुके हैं। अतः इस्लामी गणतंत्र तथा राष्ट्रवासियों का कर्तव्य है कि वो किसी भी पूरब या पश्चिम उपासक केन्द्र से संबंधित लोगों को विश्व विद्यालयों तथा शिक्षा के अन्य केन्द्रों में घुसने न दें और पहले ही कदमपर उन्हें रोक दें ताकि बाद में कोई समस्या सामने न आए और ये शिक्षा केन् द्र उनके काबू से बाहर न हो सके। स्कूलों कालेजों तथा विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रिय नवयुवकों तथा युवकों से मेरी वसीयत यह है कि वो इन खराबियों को दूर करने के लिए स्वयं ही साहस पूर्ण कदम उठाएँ ताकि उनके देश की स्वतंत्रता पूरी तरह सुरक्षित रहे।

(थ) सेना, फ़ौज, सीमा-सुरक्षा-बल, पुलिस, क्रान्ति सुरक्षा-बल, तथा कबीलों की सशस्त्र सेना विशेष महत्व रखती हैं। इन लोगों पर- जो इस्लामी गणतंत्र की शक्तिशाली भुजाएँ हैं तथा सीमाओं, सड़कों, शहरों तथा देहातों के सुरक्षक हैं और राष्ट्र को सुकून व इत्मिनान देने वाले तथा देश की शान्ति और सुव्यवस्था के संरक्षक हैं - देशवासियों तथा हुकूमत व पार्लियामेण्ट को विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि आज दुनियाँ में महाशक्तियाँ तथा नाशकारी राजनीति जिस चीज़ और जिस वर्ग से सबसे ज़्यादा फायदा उठाती हैं वह यही सशस्त्र सेनाबल है। ये सशस्त्र बल ही हैं जिनके हाथों से राजनीतिक षड़यंत्रों के द्वारा बगावत तथा हुकूमतों का तख़्ता पलटने का काम लिया जाता है। छलकपट से काम लेने वाले स्वार्थी वर्ग इनके कुछ कमाण्डरों को खरीद लेते हैं और उनके द्वारा तथा षड़यंत्रों के जाल में फँसे हुए कमाण्डरों की कूटनीतिज्ञता के द्वारा देशों पर कब्ज़ा कर लेते हैं और अत्याचार सहन करने वाली कौमों पर अपना स्वामित्व स्थापित करके राष्ट्रों की स्वतंत्रता को छीन लेते हैं। अगर पवित्र चाल-चलनवाले कमाण्डर सशस्त्र सेनाओं के सेनापति हों तो देश द्रोहियों के लिए विद्रोह या किसी देश पर कब्ज़ा कर लेने की संभावना नहीं रहती और यदि कभी कोई ऐसा मौका आ भी जाय तो जिम्मेदार तथा वफ़ादार कमाण्डर उस विद्रोह को असफलण्बना देगें।

ईरान में भी देशवासियों के हाथों इस युग की जो चमत्कारी घटना घटित हुई है उसमें ईश्वर पर इमान रखने वाली सशस्त्र सेनाओं तथा देशप्रेमी सदाचारी कमाण्डरों ने मुख्य भूमिका अदा की है। आज जबकि अमरीका और सभी महाशक्तियों के आदेश तथा सहायता से सद्दाम्कि रीति की ओर से थोपी गई विनाशकारी जंग, लगभग दो वर्ष गुज़र

जाने के बाद बासपार्टी (Baath Party) की आक्रमणकारी फ़ौज बड़ी ताक़तों की सहायता के बावजूद राजनैतिक एवं सैनिक असफलता का शिकार होने वाली है। इस अवसर पर भी सशस्त्र सेनाओं के बहादुर सिपाहियों ने रणभूमि में तथा उससे अलग हटकर जनता की सहायता के सहारे यह महान कारनामा दिखा कर ईरान के मस्तिष्क को ऊँचा उठाया है और पूरब तथा पश्चिम से संबंधित कठपुतलियों के हाथों इस्लामी गणतंत्र का तख्ता पलटने वाली आंतरिक साज़िशों और शरारतों को सम्मानित जनता की सहायता से पुलिस, क्रान्ति सुरक्षाबल तथा सुरक्षा समिति के नवयुवकों की शक्तिशाली भुजाओं ने असफल बना दिया है। यह वफ़ादार तथा अपनी जान निछावर करने वाले बहादुर जवान ही है जो रातों को जागकर देशवासियों को सुखचैन से सोने का अवसर प्रदान करते हैं। ईश्वर इनकी सहायता एवं सुरक्षा करें।

अतः अपने जीवन के अंतिम क्षणों में सशस्त्र सेनाओं से मेरी वसीयत ये है कि ऐ मेरे प्यारो! तुम लोग वास्तव में इस्लाम से प्रेम करते हो और ईश्वर-प्रेम से ही रण भूमि में तथा देश के भीतर कुर्बानी तथा वफ़ादारी की भावना के साथ मूल्यवान कर्तव्य को पूरा करने में लगे हुए हो। तुम लोग बुद्धिमानी तथा जागृति के साथ अपने काम में लगे रहो, क्योंकि राजनैतिक खिलाड़ियों, पूरब व पश्चिम की ओर से पेशावर राजनीतिज्ञों, तथा परदे के पीछे छुपे रहने वाले अपराधियों के षड़यंत्रकारी हथियार तुम्हारी ताक में हैं। वास्तव में तुम्ही लोग ने अपनी जान पर खेल के क्रान्ति को सफल और इस्लाम को जीवित किया है। षड़यंत्रकारी वर्ग से संबंध रखने वाले लोग तुम्हारे ही द्वारा इस्लामी गणतंत्र का विनाश करना चाहते हैं। वो तुम्हें इस्लाम और देश तथा देशवासियों की सेवा के नाम पर इस्लाम और जनता से अलग करके दुनियाँ के दो लुटेरे वर्गों में से किसी एक की गोद में डालकर राजनीतिक षड़यंत्रों तथा इस्लामी व राष्ट्रप्रिय नारों के द्वारा तुम्हारी मेहनत और कुर्बानियों का सर्वनाश कर देना चाहते हैं।

देश के सशस्त्र, सेनाओं से मैं बड़ी ताकीद के साथ यह वसीयत करता हूँ कि सेना के नियमों का पालन करते वह किसी भी राजनीतिक दल में शामिल न हों। सशस्त्र सेना बलों को-चाहे उनका सम्बंध सेना से हो या शान्ति एवं सुव्यवस्था की देखभाल करने वाले संस्थानों से, चाहे वह क्रान्ति सुरक्षा बल के सिपाही हों या पुलिस बल के सिपाही- किसी कीमत पर भी किसी राजनीतिक पार्टी में शामिल न हों और स्वयं को राजनीतिक खेलों से दूर रखें। केवल ऐसी ही स्थिति में वह अपनी सैनिक शक्ति को कायम रख सकते हैं। सेना कमान्डरों का कर्तव्य है कि वह अपने आज्ञाकारी सेनानियों को किसी भी राजनीतिक दल में शामिल होने से रोके। और चूँकि क्रान्ति का सम्बंध सभी देशवासियों से है और इसकी सुरक्षा हर देशवासी का परम कर्तव्य है अतः सरकार, जनता, सुरक्षा समिति तथा पार्लियामेन्ट सब का राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्तव्य है कि यदि सशस्त्र सेना - चाहे वह सेनाध्यक्ष हो या साधारण सिपाही या उच्च अधिकारी - इस्लाम अथवा देश के हितों के विरूद्ध कोई कदम उठाना चाहे अथवा किसी राजनीतिक दल में शामिल होना चाहे- कि ऐसी स्थिति में बिल्कुल तबाह हो जायेगी या राजनीतिक खेलों में भाग लेना चाहे तो पहले ही कदम पर उसका विरोध

करें। और नेता अथवा नेतृत्व कौंसिल का परम कर्तव्य है कि वह इसकी भरपूर रोकथाम करे ताकि देश हर तरह के खतरों से सुरक्षित रहे।

मैं अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में प्रेम एवं सद्भाव के साथ सभी सशस्त्र सेनाओं से वसीयत करता हूँ कि इस्लाम ही स्वतंत्रता का एक मात्र मक़सद है और खुदावन्दे आलम इसी की हिदायत की रोशनी के द्वारा सबको मानवता के उच्च शिखर की ओर आमंत्रित करता हैं। अतः जिस तरह आज तुम इस्लाम के प्रति वफ़ादार हो उसी तरह अपनी वफादारी पर अटल रहो क्योंकि इस्लाम तुम्हें तुम्हारे देश व देशवासियों को उन शैतानों की गुलामी से नजात दिलाता है जिनका एक मात्र उद्देश्य तुम्हें गुलाम बनाना तुम्हारे प्रिय देश और देशवासियों को दलित और खर्च करने वाली मंडी बनाना तथा अत्याचार के अनादरतापूर्ण बोझ के तले दबाये रखना है। अतः मानवतापूर्ण सदाचारी जीवन को- अनेकानेक कठिनाइयों के बावजूद- विदेशियों की गुलामी के अपमानजनक जीवनपर-मानवता विरोधी सुविधाओं के होते हुए भी-प्राथमिकता दो और अच्छी तरह जान लो कि जब तक विकसित उद्योगों की आवश्यकता के संबंध में दूसरों के आगे अपने हाथ फैलाते रहोगे तथा भिखारियों का जीवन व्यतीत करते रहोगे तुम्हारे अंदर अविष्कार की क्षमता पैदा न हो सकेगी। तुम स्वयं अपनी आँखों से भलि-भाँति देख चुके हो कि आर्थिक नकाबंदी के बाद वही लोग जो खुद को छोटी से छोटी चीज़ बनाने में असमर्थ और अक्षम्य समझते थे और कारखाने चलाने के सिलसिले में जिनको हताश किया जा रहा था जब उन्होंने सोच विचार से काम लिया तो सेना तथा कल-कारखानों की बहुत सी आवश्यकताओं को उन्होंने स्वयं ही पूरा कर दिया। यह युद्ध आर्थिक नाकाबंदी तथा विदेशी विशेषज्ञों का बहिष्कार एक इलाही तोहफा था जिससे हम पूरी तरह अपरिचित और अनभिज्ञ थे। आज यदि स्वयं सेना और सरकार अंतर्राष्ट्रीय लुटेरों के उत्पादनों का बहिष्कार करके खोज एवं अविष्कार के संबंध में और अधिक प्रयत्नशील हो जतायें तो आशा है कि हमारा देश और अधिक आत्मनिर्भर हो जायेगा। और हम लोगों को दुश्मन के सामने हाथ फैलाने से छुटकारा मिल जाएगा।

यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि इस वास्तविकता को झुठलाया नहीं जा सकता कि इतने सारे बनावटी पिछड़ेपन के बाद हम दूसरे देशों के बड़े उद्योगों के मुहताज हैं। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि हम प्रगति से मालामाल विज्ञान के क्षेत्र में किसी एक भाग से संबंधित हो जायँ। सेना तथा सरकार को प्रयत्न करना चाहिए कि ईश्वर में विश्वास रखने वाले तथा अपने उत्तरदायित्व को समझने वाले विद्यार्थियों को उन देशों में भेजें जो विकसित बड़े उद्योगों के मालिक हैं और साम्राज्यवादी एवं शोषणकारी भी नहीं हैं। विद्यार्थियों को अमरीका रूस तथा इन दो गुटों के मार्ग पर चलने वाले अन्य देशों में भेजने से परहेज़ करें। मगर यह कि वो दिन आ जाय जब यह दोनों शक्तियाँ अपनी गलतियों से परिचित होकर दूसरों के अधिकारों के सम्मान, मानवप्रेम तथा मानवता के मार्ग पर चलने लगें या यह कि इन्शा-अल्लाह दुनियाँ के कमज़ोर एवं दलित लोग संसार की जागृत जनता, वफ़ादार व जिम्मेदार मुसलमान इनके स्थान पर ला बिठाएँ। मैं उस दिन की आशा और कामना करता हैं।

(द) रेडियो, टेलीविज़न, समाचार पत्र, सिनेमा तथा थियेटर आदि, राष्ट्रों विशेष रूप से युवा पीढ़ी को तबाह और लापरवाह करने के असरदार साधन रहे हैं। वर्तमान शताब्दी विशेषरूप से इसके अंतिम पचास वर्षों में इन माध्यमों से कैसे-कैसे महाशैतानी मनसूबों को कार्यान्वित किया गया है। चाहे इसका संबंध इस्लाम तथा जनसेवा में लगे हुए धार्मिक उलेमा के खिलाफ प्रोपगंडे से रहा हो या पूर्वी तथा पश्चिमी सम्राज्यवाद के प्रचार से। इन माध्यमों को अपने उत्पादनों विशेषतयः श्रृंगार और सजावट व फैशन की वस्तुओं की मंडी बनाने, अपने ढंग की इमारतों और उनके डिकोरेशन की नकल उतरवाने, और खाने पीने की चीज़ों तथा उनके अपने निजी ढंग के रहने सहन की पैरवी करने की लिए इस्तेमाल किया जाता था। यहाँ तक कि बातचीत उठना-बैठना व केवल इतना ही नहीं बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में युरोपीय ढंग अपनाना और अंग्रेजों की तरह रहना बड़े गौरव की बात समझी जाने लगी थी। विशेष रूप से मालदार या तनिक कम मालदार घराने की औरतें इस बीमारी की अधिकतर शिकार थीं। बातचीत का अंदाज़ तथा लिखने और बोलने में युरोपीय शब्दों का प्रयोग कुछ इस प्रकार किया जाता था कि उसका समझना आम आदमियों के लिए असंभव यहाँ तक कि स्वयं उनके साथ उठने बैठने वालों के लिए भी कठिन था। टेलीविज़न पर दिखाई जाने वाली फिल्में पूरब या पश्चिम की बनाई हुई होती थीं जो जवान पुरूषों और स्त्रियों का साधारण जीवन की डगर तथा ज्ञान व बुद्धि, मेहनत व कारीगरी तथा पैदावार से अलग हटाकर स्वयं अपने और अपने व्यक्तित्व से अपरिचित बना देती थीं तथा अपने देश, अपनी हर चीज़ यहाँ तक कि अपनी सभ्यता व संस्कृति तथा उन मूल्यवान पुरातत्वों एवं अविष्कारों से भी बदगुमान कर देती थीं जिनका एक बहुत बड़ा हिस्सा स्वार्थी वर्ग के लोगो के द्वारा देश से निकलकर पूरब व पश्चिम के संग्रहालयों व पुस्तकालयों में पहुँच चुका है। गंदी पत्रिकाओं, दुखद आलेखों, शर्मनाक चित्रों तथा समाचार पत्रों में अपने इस्लाम विरोधी तथा इस्लामी सभ्यता के विरूद्ध आलेख प्रकाशित करने के बाद बड़े गौरव के साथ आम जनता और विशेष रूप से असरदार जवान पीढ़ी को युरोप व पश्चिम की ओर हँका रहे हैं। इसके साथ ही साथ गंदे एवं अनैतिक काम के अड्डों, जुवाँखानों, लॉटरियों बाहरी सजावट के सामनों, बनाव श्रृंगार के समानों व खिलौने बेचने वाली दुकानों, शराबखानों और विशेषरूप से पश्चिम से आयात की जाने वाली वस्तुओं को बढ़ावा देने के लिए बड़े पैमाने पर विज्ञापनों की भरमार थी तथा तेल, गैस, तथा अन्य मूल्यवान प्राकृतिक वस्तुओं का निर्यात करके उसके बदले में गुड़ियाँ, खेलकूद और फैशन के सामान और इसी प्रकार की सैकड़ों ऐसी चीज़ें आयात की जाती थीं जिसकी हम जैसे लोगों को खबर नहीं है। यदि ईश्वर न करे ये देश का सर्वनाश करने वाली, तथा विदेशी शक्तियों की ऐजेण्ट पहलवी हुकूमत बाकी रह जाती तो कुछ ही दिनों में ये इस्लाम और देश के सपूत जिनसे कौम की उम्मीदें जुड़ी हुई हैं अनैतिक शासन तथा पूरब व पश्चिम उपासक बुद्धिजीवियों के हाथों शैतानी षड़यन्त्रों एवं कुचक्रों के जाल में फँसकर इस्लाम तथा देशवासियों से अलग हो जाते। या अनैतिक कार्य के अड्डों में अपनी युवाअवस्था तबाह कर बैठते या अंतर्राष्ट्रीय लुटेरी शक्तियों के आज्ञाकारी सेवक बनकर देश को तबाह व बर्बाद कर डालते।

खुदा वन्दे आलम ने हम पर और उन लोगों पर एहसान किया है और हम सबको अवैध कार्य करने वाले तथा लुटेरों से मुक्ति दिला दी। अब वर्तमान तथा भविष्य की पार्लियामेण्ट, राष्ट्रपति तथा बाद में आने वाले राष्ट्रपतियों तथा हर युग की सुरक्षा समितियों, उच्च अदालती कौन्सिल तथा सरकार से मेरी वसीयत यह है कि इन समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, समाचार पहुँचाने वाली एजेन्सियों को इस्लाम तथा राष्ट्रीय हितों से अलग न हटने दें। और हम सबको यह जान लेना चाहिए कि पश्चिमी ढंग की आज़ादी, युवकों और युवतियों की तबाही और बर्बादी का कारण बनती हैं और अक्ल तथा इस्लाम की दृष्टि में ये अत्यंत निन्दनीय है। इस्लाम आम जनता की मान मर्यादा तथा राष्ट्रीय हितों के खिलाफ प्रोपगंडे लेख भाषण पुस्तकें तथा पत्रिकाएँ हराम हैं, हम सब मुसलमानों का परम कर्तव्य है कि इसकी रोकथाम करें। विनाशकारी स्वतंत्रताओं पर प्रतिबंध लगाना आवश्यक है। धार्मिक नीतियों के अनुसार जो चीजें अवैध (हराम) हैं, इस्लामी देश व देशवासियों की विचारधारा के विरुद्ध तथा इस्लामी गणतंत्र की शानो-शौकत के खिलाफ़ हैं। यदि पूर्ण रूप से इसकी रोकथाम न की जाय तो हम सब उत्तरदायी हैं। अगर जनता तथा हिज़्बुल्लाही वर्ग के युवकों को इस प्रकार की चीज़ें दिखाई दें तो वो संबंधित संस्थानों से संपर्क करें और यदि संबंधित संस्थान लापरवाही के तो इन लोगों के लिए आवश्यक है कि वो स्वयं ही इसकी रोकथाम का प्रबंध करें। खुदा वन्दे आलम तुम सबकी सहायता करे।

(घ) इस्लाम और इस्लामी गणतंत्र का विरोध करने वाले लोगों, विरोधी वर्गों तथा टोलियों से प्रथम चरण में देश के अन्दर तथा देश से बाहर उनके नेताओं से यह निवेदन है कि तुम लोगों ने अब तक जो कदम उठाए हैं जो षड़यंत्र रचे हैं तथा जिसका अनुभव तुम सभी नाममात्र बुद्धिमानों को यह सिखा चुका होगा कि किसी कौम के बहते हुए धारे को आतंकवाद, बम के धमाकों निराधार आरोपों तथा झूठे प्रोपगण्डों से नहीं मोड़ा जा सकता और कभी भी किसी हुकूमत को इन मानवता विरोधी अनैतिक तरीकों से समाप्त नहीं किया जा सकता। विशेषरूप से ईरान जैसी कौम को जिसके बच्चे-बूढ़े, औरतें और मर्द सभी एक लक्ष्य अर्थात इस्लामी गणतंत्र कुर्आन और धर्म की राह में भरसक प्रयत्न और हर संभव कुर्बानी देने में लगे हुए हैं। तुम्हें तो मालूम है-और यदि नहीं जानते तो बहुत साधारण ढ़ग से सोचते हो- कि जनता तुम्हारे साथ नहीं है, सेना तुम्हारी दुश्मन है, और यदि यह मान भी लो कि जनसमुदाय तुम्हारे साथ था भी तो तुम्हारी मूर्खतापूर्ण हरकतों तथा इन मानवता विरोधी अपराधों ने -जो तुम्हारे इशारे पर किए गए-उनको तुमसे अलग कर दिया, परिणामस्वरूप तुम लोग दुश्मन बनाने के अतिरिक्त और कुछ न कर सके।

मैं जीवन के अंतिम चरण में तुम्हारी भलाई को ध्यान में रखते हुए कि सर्वप्रथम तुमने उस अत्याचार सहन करने वाली कौम के विरुद्ध लड़ाई छेड़ी है जिसने ढ़ाई हज़ार साल "अत्याचार-शाही" के पश्चात अपनी गोद के पाले हुए युवकों की कुर्बानी देकर स्वयं को पूरब व पश्चिम के लुटेरों तथा पहलवी हुकूमत जैसे अपराधियों के अन्याय एवं अत्याचार से मुक्ति दी है। एक आदमी चाहे कितनी ही कुकर्मी हो, इस बात पर उसकी आत्मा कैसे राज़ी हो सकती है कि एक पद्वी मिलने की आशा में

अपने देश और जनता से ऐसा व्यवहार करे और तनिक भी उनके छोटे बड़े पर दया न करे। मैं तुम लोगों को नसीहत करता हूँ कि इस प्रकार की मूर्खतापूर्ण और बेफायदा हरकतें न करो। जहाँ कहीं भी हो यदि कोई घोर-अपराध (कत्ल आदि) नहीं किया तो अपने देश और इस्लाम की तरफ वापस आ जाओ, तौबा करो और यदि साहस है तो इस दुनियाँ में अपने किये हुए की सज़ा झेलकर स्वयं को ईश्वर के भयानक प्रकोप से बचा लो। और यदि सज़ा भुगतने का साहस नहीं है तो जहाँ कहीं भी हो अपने जीवन को और अधिक बर्बाद न करो और किसी दूसरे काम में व्यस्त हो जाओ क्योंकि इसी में तुम्हारा हित है।

इसके पश्चात मैं उनके आन्तरिक तथा विदेशी पिट्ठुओं से वसीयत करता हूँ कि आखिर तुम किस कारणवश अपनी जवानी इन लोगों के लिए बर्बाद कर रहे हो जिनके विषय में यह साबित हो चुका है कि वह अन्तर्राष्ट्रीय लुटेरों के सेवक हैं, उन्हीं की योजनाओं के अनुसार काम करते हैं और अन्जाने में उनके षड़यंत्र के जाल में फँसे हैं। आखिर तुम किस उद्देश्य को पूरा करने के लिये अपने देशवासियों के साथ अत्याचार कर रहे हो? तुम इनके हाथों धोखा खाए हुये हो। यदि तुम ईरान में हो तो स्वयं अपनी आँखों से देख रहे हो कि ईरान की जनता इस्लामी गणतंत्र की समर्थक, वफ़ादार तथा इसके लिए अपनी जान न्यौछावर करने के लिए तैयार है। तुम, स्वयं अपनी आँखों से देख रहे हो कि वर्तमान शासन दिलो जान से कमज़ोर एवं दलित जनता की सेवा कर रहा है। और जो लोग जनता के समर्थक तथा उनके फिदाई व मुजाहिद होने का झूठा दावा करते हैं, वास्तव में जनता जनार्दन की दुश्मनी पर कमर बाँधे हुए है, और वो सीधे-सीधे लड़के-लड़कियों को अपने तथा दो अंतरराष्ट्रीय ब्लाकों में से एक उद्देश्यों के लिए खिलौना बनाए हुए हैं। और स्वयं या तो उनकी गोद में विलासिता का जीवन व्यतीत कर रहे हैं, या देश के अन्दर दुर्भाग्यी अपराधियों के महलों के समान ऊँची-ऊँची बिल्डिंगों में वैभव एवं विलासपूर्ण जिन्दगी बिताते हुए अपनी अपराधजनक हरकतों को जारी रखे हुए है, और तुम युवकों को मौत के मुँह में ढ़केल रहे हो।

देश के अन्दर तथा देश से बाहर मौजूद युवकों को मेरी नसीहत यह है कि गलत रास्ते को छोड़र वापस आ जाओ और समाज के उन कमज़ोर एवं दलित वर्ग के लोगों के साथ मिल जाओ जो दिलो जान से इस्लामी गणतंत्र की सेवा कर रहे हैं। अपने स्वतंत्र देश ईरान के लिए काम करो ताकि यह देश तथा इसके वासी विरोधियों के अत्याचार से निजात पा जाय और सब मिलकर सम्मानपूर्वक सज्जनता का जीवन व्यतीत करो। आखिर कब तक और किस उद्देश्य के लिए उन की आज्ञा का पालन करते रहोगे जिन्हें अपने हितों के सिवा किसी चीज़ की कोई चिन्ता नहीं और जो महाशक्तियों की गोद और उनकी शरण में बैठे हुए अपनी कौम से युद्ध कर रहे है और तुम्हें अपने अवैध लक्ष्यों तथा सत्ता की लालसा के लिए भेंट चढ़ा रहे हैं। तुम लोगों ने क्रान्ति की सफलता के बाद इन वर्षों में देख लिया है कि इनके दावे इनके कर्तव्य एवं आचरण के खिलाफ हैं। इन दावों का एक मात्र उद्देश्य पवित्र हृदयवाले जवानों को धोखा देना है। तुम्हें मालूम है कि जनता के उमड़ते हुए तूफान के आगे

तुम्हारी कोई हैसियत नहीं है! तुम्हारी अवैध हरकतों का नतीजा स्वयं अपनी जवानी को बर्बाद करने और स्वयं को नुकसान पहुँचाने के सिवा कुछ भी नहीं है। मार्गदर्शन करना मेरा कर्तव्य था जिसे मैंने पूरा कर दिया और आशा है कि तुम इस वसीयत पर जो मेरी मौत के बाद तुम लोगों तक पहुँचेगी और जिसमें सत्ता प्राप्ति का शक भी नहीं-अवश्य अमल करोगे और स्वयं को भयानक दंड से मुक्ति दिलाओगे। खुदा वन्दे करीम तुम लोगों को सीधे और सच्चे मार्ग की तरफ ले जाय।

कम्युनिस्टों 'फिदाई-ए-ख़लक' छापामारों और वामपंथी विचारधारा से प्रभावित दूसरे गिरोहों से मेरी वसीयत यह है कि तुम लोगों ने इस्लाम तथा अन्य विचारधाराओं के विषय में ऐसे लोगों के निरीक्षण में, जो सभी विचारधाराओं विशेषतः इस्लाम के बारे पूर्व ज्ञान रखते हैं, पूरी तरह छानबीन और सही ढ़ंग से खोज किए बिना किस उद्देश्य के लिए स्वयं को इस विचारधारा को अपनाने पर राज़ी कर लिया है जो आज दुनियाँ में पूर्णतः असफल हो चुकी है। आखिर तुम्हें क्या हो गया है कि तुम इन कुछ "इज़्मों" के प्रेम-बंधन में बंध गये हो जो शोधकर्ताओं की निगाह में बिल्कुल खोखले हैं। वह कौन सी चीज़ है जिसने तुम्हें अपने देश को रूस या चीन की झोली में डाल देने पर विवश कर दिया है। और तुम जन सेवा के नाम पर अपने देशवासियों से युद्ध करने में जुट गये हो या अपने मज़लूम देश के खिलाफ विदेशियों के हित में षड़यंत्रों का जाल फैला रहे हो? तुम देख ही रहे हो कि कम्युनिज्म के आरम्भ से आज तक इसके दावेदारों ने तानाशाही, स्वामित्वता तथा पूँजीवाद का ऐसा उदाहरण पेश किया है जिसकी मिसाल दुनिया की किसी भी हुकूमत में नहीं मिलती। जनता के मार्ग प्रदर्शन के दावेदार रूस के पैरों के नीचे अब तक कितनी कौमें कुचली जा चुकी हैं और अपनी हैसियत खो चुकी हैं। अभी तक रूस की मुसलमान तथा अन्य कौमें कम्युनिस्ट पार्टी के अत्याचार के बोझ से दबी हुयी है और उन्हें किसी प्रकार की आज़ादी नहीं है बल्कि इसके विपरीत वह जिस घुटन के वातावरण में जीवन व्यतीत कर रही है वह संसार की महान अत्याचारी हुकूमतों में भी नहीं दिखाई देता है। स्टालिन जिसको कम्युनिस्ट पार्टी का सबसे अधिक चमकदार चेहरा माना जाता है, उसका आवागमन, ठाटबाट ऐशो आराम तथा बिलासिता का हाल हम सब देख चुके हैं। आज तुम जिस प्रणाली के प्रेम में अपनी जान निछावर कर रहे हो उसका हाल यह है कि रूस तथा उससे सम्बन्धित देश जैसे अफगानिस्तान की मज़लूम जनता उनके अत्याचार के शिकंजे में दम तोड़ रही है। इसके अतिरिक्त तुम जनता के समर्थन का दावा किया करते हो जब कि जहां भी तुम्हारा हाथ पहुँचा तुमने जनता पर घोर अत्याचार किया। "आमुल" नामी क्षेत्र की जनता के साथ तुमने कौन सी अपराधी हरकत नहीं की? जबकि इस क्षेत्र वालों को तुम अपना पक्का समर्थक बताया करते थे। बहुत से लोगों को तुमने धोखा देकर तुमने हुकूमत और जनता से जंग करने के लिये भेजा और उन्हें मौत के घाट उतरवा दिया। तुम मज़लूल जनता के समर्थन का दावा करने वाले वास्वत में कमजोर तथा दलित वर्ग की जनता को रूसी तानाशाही के हवाले करना चाहते हो और इस छल कपट के मुँह पर "फिदाई-ए-ख़ल्क" तथा दलित वर्ग के सहायक का मुखौटा चढ़ा कर अपनी मानवता विरोधी योजनाओं को कार्यान्वित करना चाहते हो बस

अंतर केवल इतना है कि "तूदह" पार्टी और उसके कारेड अपने चेहरों पर इस्लामी गणतंत्र की नकाब डालकर षड्यंत्रों के द्वारा तथा दूसरे गिरोह शस्त्रों-बमों तथा आतंकवादी घटनाओं के द्वारा इस्लाम विरोधी काम में लगे रहते हैं।

मैं तमाम पार्टियों से-चाहे वह बामपंथी विचार के लिये प्रसिद्ध हो यद्यपि जैसा कि कुछ मज़बूत सूत्रों से पता चलता है कि यह अमरीकी कम्युनिस्ट है और चाहे वह पश्चिम से रोज़ी हासिल करती हो और या वह "कोमला" व डिमोक्रेट जैसी पार्टियाँ हों जिन्होंने कुर्द तथा बलूच जनता की सहायता तथा स्वाधीनता के नाम पर हथियार उठाकर कुर्दिस्तान तथा अन्य क्षेत्रों की जनता को तबाह किया और इन प्रान्तों में इस्लामी गणतंत्र की सांस्कृतिक, आर्थिक तथा स्वास्थ सम्बंधी सेवाओं के मार्ग में रूकावटें पैदा की हैं - मेरी वसीयत है कि आम जनता से मिल जाँय। इतनी अवधि में उन्होंने अनुभव करा लिया है कि इन क्षेत्रों के लोगों को तबाह करने के अलावा कोई काम किया है और न कर सकते हैं। अतः स्वंय उनका उनकी कौम तथा उनके क्षेत्रों का हित इसी में है कि वह सरकार के साथ सहयोग करे। विद्रोह तथा विदेशी शक्तियों की सेवा तथा अपने देश से गद्दारी न करें। देश की प्रगति के लिये कार्य करे और विश्वास रखें कि इस्लाम उनके लिये बड़े अपराधी पश्चिमी ब्लाक तथा तानाशाही पूर्वी ब्लाक से अधिक उत्तम हैं। इसके अतिरिक्त इसमें मानव इच्छा को पूरा करने की क्षमता भी अधिक है।

उन मुसलमान जमातों से जो गलती में पड़कर पश्चिम या पूरब की तरफ और कभी-कभी मुनाफिकों का समर्थन करती हैं जिनकी धोखेबाज़ी अब खुलकर सामने आ चुकी है और इस्लाम के उन विरोधियों और बुराई चाहने वालों से- जो गलती में पड़कर कभी कभी इस्लामी गणतंत्र को भला बुरा कहा करते थे- मेरी वसीयत यह है कि अपनी गल्तियों को दुबारा न दुहराओ और इस्लामी साहस से काम लेते हुए अपनी गलती मान लो। खुदा की खुशी के लिए सरकार पार्लियामेण्ट और मज़लूम जनता के साथ हो जाओ और इतिहास के मजलूमों को अत्याचारियों के अत्याचार से मुक्ति दिलाओ और पवित्र हृदय, पवित्र विचार, और अपना उत्तरदायित्व महसूस करने वाले धार्मिक विद्वान "मुदर्रिस मुहम" के इस कथन को ध्यान में रखो जिसे उन्होंने उस युग की मुरझाई हुई दुखदपूर्ण पार्लियामेण्ट में बयान किया था कि "जब हमें मिट ही जाना है तो फिर हम स्वयं अपने ही हाथों अपने को क्यों मिटाएँ।" आज मैं भी इस महान शहीद की याद में आप तमाम भाइयों से यह कहता हूँ कि अगर हम अमरीका व रूस के अपराधी हाथों को दुनियाँ से मिटा दिये जायँ तो यह बात इससे कहीं ज्यादा उचित है कि पूरब की लाल तथा पश्चिम की काली सेना के झण्डे के नीचे हम लोग ऐशो-आराम का जीवन व्यतीत करें। और यही ईश्वर के दूतों (नबियों मासूम इमामों) तथा महान धार्मिक नेताओं का तरीका रहा है। हमें चाहिए कि उन्हीं लोगों की पैरवी करें और स्वयं को यह विश्वास दिलाएँ कि यदि कोई कौम गुटनिर्पेक्षता के साथ जीवित रहना चाहे तो वह सफल भी हो सकती है। और दुनियाँ की महाशक्तियाँ किसी कौम पर उसकी इच्छा के विरूद्ध किसी विचारधारा को थोप नहीं सकतीं। अफ़ग़ानिस्तान से सबक हासिल करना चाहिए कि यद्यपि अवैध रूप से कब्ज़ा जमाने वाली हुकूमत और

संसार की सभी वामपंथी पार्टियाँ रूस के साथ थीं और हैं परन्तु अभी तक वो अफ़्गानिस्तान की जनता को कुचलने में सफल नहीं हो सकी हैं।

इसके अतिरिक्त अब संसार की कमज़ोर एवं दलित कौमें जाग चुकी हैं और अब वो दिन दूर नहीं जब इस जागृति के परिणाम स्वरूप आन्दोलन और क्रान्ति का शुभारम्भ हो जाएगा और कौमें अपने को दुनियाँ की अत्याचारी शक्तियों की गुलामी से आज़ाद करा लेंगी और आप इस्लामी आदेशों की पैरवी करने वाले मुसलमान देख रहे हैं कि पूरब और पश्चिम से जुदाई से कितना फायदा हो रहा है। स्थानीय बुद्धि में तीव्रगति पैदा हो चुकी है और लोग आत्मनिर्भरता की ओर आगे बढ़ रहे हैं। जिस चीज़ को पूरब और पश्चिम के विशेषज्ञ हमारी कौम के लिए असंभव बताते थे, आज बड़े-पैमाने पर हमारी कौम के द्वारा वो सुचारू रूप से पूरी हो रही है और ईश्वर ने चाहा तो भविष्य में भी स्थानीय स्तर पर पूरी होती रहेगी। और अफसोस कि ये क्रान्ति तनिक देर से सानने आई और कम से कम मोहम्मद रज़ा के अत्याचारी शासन के आरंभ ही में नहीं आई। यदि यह क्रान्ति उसी समय आ गई होती तो आज का यह लुटा हुआ ईरान दूसरा ही ईरान होता।

लेखकों, उपदेशकों, बुद्धिजीवियों तथा आलोचकों से मेरी वसीयत यह है कि अपना समय इस्लामी गणतंत्र के विरोद्ध में खर्च करने और अपनी सारी शक्ति पार्लियामेण्ट हुकूमत तथा अन्य सेवकों की कटु आलोचाना में लगाने तथा अपने इस काम से देश को बड़ी ताकतों की ओर ढ़केलने के बजाय एक रात अपने ईशवर के साथ एकांत में व्यतीत कीजिए। और यदि ईश्वर में विश्वास नहीं रखते हो तो स्वयं अपनी अंतरात्मा से पूछिए, तथा अपने आन्तरिक विचारों की समीक्षा कीजिए जिनसे प्रायः बहुत से लोग अनजान होते हैं। सोच विचार कीजिए कि आखिर किस कारणवश और किस इंसाफ की बुनियाद पर आप रणक्षेत्रों एवं देश तथा शहरी इलाकों में टुकड़े-टुकड़े होने वाले युवकों के खून को जान बूझकर भुला रहे हैं। और वो कौम जो आंतरिक एवं विदेशी अत्याचारियों के बोझ से मुक्ति प्राप्त करना चाहती है और अपनी व अपनी प्रिय सन्तानों की जान न्यौछावर करके स्वतंत्रता और स्वाधीनता को गले लगाए हुए हैं और मूल्यवान कुर्बानियों के द्वारा इसकी सुरक्षा करना चाहती हैं, उससे मानसिक युद्ध लड़ रहे हैं। मतभेदों एवं षड़यंत्रों को बढ़ावा दे रहे हैं, तथा अत्याचारियों के लिए रास्ता सुधारने में लगे हुए हैं। क्या यह उचित नहीं है कि आप लोग अपने विचार आलेख तथा उद्घोषणा के द्वारा अपने देश की सुरक्षा के लिए सरकार पार्लियामेण्ट तथा जनता का नेतृत्व कीजिए? क्या यह उचित नहीं है घोर अत्याचारों के बोझ से दबी हुई इस दलित कौम की सहायता कीजिए और अपनी सहायता तथा समथर्यन के द्वारा इस्लामी शासन को सुदृढ़ बनाइये? क्या आप इस पार्लियामेण्ट राष्ट्रपति सरकार तथा न्यायपालिका को पिछली शासन पद्धति से खराब समझते हैं? क्या आपने पहलवी हुकूमत के द्वारा इस मज़लूम व बेसहारा कौम पर होने वाले अत्याचार व अन्याय को भुला दिया है? क्या आप नहीं जानते कि यह इस्लामी देश पिछले युग में अमरीका का फौजी अड्डा बना हुआ था। तथा वो इस देश के साथ गुलाम देश जैसा व्यवहार करते थे।- पार्लियामेण्ट, सरकार, तथा सेना सभी कुछ उनके अधिकार में था। उनके

विशेषज्ञ और उद्योगपति इस कौम और इसके प्राकृतिक खज़ानों के साथ क्या व्यवहार करते थे? क्या देशभर में फैले हुए अय्याशी के अड्डों जुवाँखानों, शराब की दुकानों, सिनेमाघरों तथा विलासिता के अन्य केन्द्रों का स्थापन जिनमें से हर एक युवा पीढ़ी को तबाह करने का एक बड़ा षड्यंत्र था आपके दिमाग से मिट गया है? क्या उस हुकूमत के समाचार पत्रों को आपने भुला दिया है? और आज जबकि अय्याशी और गंदगी के उन बाज़ारों का नामो-निशान भी बाकी नहीं रहा है, कुछ अदालतों या कुछ युवकों के कारण जिनके बारे में यह आशंका है कि वो भटके हुए गिरोहों के घुसपैठिये हों और इस्लामी गणतंत्र को बदनाम करने के लिए गलत काम कर रहे हों, तथा इन मुट्ठीभर फसाद फैलाने वाले लोगों के कत्ल ने-जो इस्लाम और इस्लामी गणतंत्र के खिलाफ बग़ावत कर रहे थे-आप की फरियादों को ऊँचा कर दिया? आप उन लोगों से संबंध स्थापित कर रहे हैं और भाइचारे का नाता जोड़ रहे हैं जो खुले-आम इस्लाम की आलोचना करते हैं और उसके विरोध में सशस्त्र बगावत या उससे भी अधिक अफसोसनाक ढ़ंग से अपने आलेख तथा भाषणों के द्वारा बगावत फैलाने में लगे हैं। ईश्वर ने जिन लोगों का कत्ल उचित बताया है उन्हें आप अपने आँख का तारा बना रहे हैं? 14 इस्फन की दुखद घटना को जन्मदेने वाले खिलाड़ी जिन्होंने बेगुनाहों पर घातक प्रहार किए उन्हीं की गोद में बैठकर इसका तमाशा देखते रहे! यह इस्लामी तथा व्यवहारिक काम है! परन्तु हुकूमत और न्याय पालिका जब ऐसे दुश्मनों और देशद्रोहियों को उनके किए की सज़ा देती है तो उनके समर्थन में आप के नारों की आवाज़ गूँज उठती है और आप उनकी मज़लूमियत की दुहाई देने लगते हैं!? मुझे आप सभी भाइयों के लिए-जिनके पिछले जीवन से किसी हद तक मैं परिचित हूँ और जिनमें से कुछ लोगों से लगाव भी रखता हूँ-बड़ा दुख है। परन्तु मैं उन लोगों के लिए दुखी नहीं हूँ जो भलाई के नाम पर बुराइयों को बढ़ावा देते थे और चौकीदारी के भेस में भेड़िये का काम करते थे और ऐसे कूटनीतिज्ञ खिलाड़ी थे कि सभी को खिलौना बना रखा था और देश व देशवासियों को तबाह कर रखा था व दोनों ब्लाकों में से किसी एक की सेवा करना चाहते थे। जिन लोगों ने अपने गंदे हाथों से सम्मान योग्य युवकों और समाज सुधारक का काम करने वाले उलेमा-ए-दीन को शहीद किया। यहाँ तक कि मज़लूम और बेगुनाह मुसलमान बच्चों पर भी दया न की। उन लोगों ने समाज में अपने आप को असम्मनित और खुदा के सामने स्वयं को अपमानित कर लिया। अब उनकी वापसी के सारे रास्ते बंद हो चुके हैं क्योंकि उन पर स्वार्थ एवं स्वेच्छा का शैतान हुकूमत कर रहा है। परन्तु आप ईमानी भाई शासन और पार्लियामेण्ट की सहायता क्यों नहीं करते? तथा इससे शिकायत क्यों करते हैं? जो दलित वर्ग के मज़लूमों और उन भाइयों की सेवा करने का प्रयत्न कर रही है जो जीवन की तमाम भलाइयों से वंचित हैं। क्या आप लोगों ने हुकूमत तथा जमहूरी केन्द्रों की उन सेवाओं की जो उन्होंने इन तमाम कठिनाइयों और मुसीबतों- जो हर क्रान्ति का आवश्यक अंग है-तथा थोपे गए युद्ध के भारी नक़सान, देसी और विदेशी लाखों शरणार्थी और हद से ज़्यादा रूकावटों के बावजूद इस कम अवधि में उपलब्ध कराई गई हैं, पिछले शासनकाल के रचनात्मक कार्य से तुलना की है? क्या आप नहीं जानते कि उस ज़माने के लगभग सारे रचनात्मक कार्य विशेषरूप से शहरों में किए जाते थे और वो भी सबसे

पहले अमीरों और खुशहाल लोगों के मोहल्ले से देश के गरीबों और दलितवर्ग के लोगों को इसका बहुत मामूली हिस्सा प्राप्त होता था या उनकी तरफ से संपूर्ण लापरवाही की जाती थी। इसके विपरीत आज की इस्लामी हुकूमत और सरकार के अनेकानेक संस्थान उसी गरीब और दलितवर्ग की सेवा कर रहे हैं। ऐसी हालत में उचित यह है कि आप लोग भी सरकार की मदद करें ताकि कमज़ोर और दलितवर्ग के लोगों के उत्थान का यह महान कार्य जल्दी से जल्दीपूरा हो सके और खुदा-वन्दे-आलम के सामने-जहाँ हरेक को उपस्थित होना है- उसके बन्दों की सेवाओं जैसे पुण्यात्मक कार्यों के साथ जा सके।

(ग) एक और समस्या जिसका याद दिलाना आवश्यक प्रतीत होता है, वह यह है कि इस्लाम केवल मज़लूम जनता को कमज़ोर दलित और गरीब बनाए रखने वाले अत्याचारी साम्राज्यवाद का विरोधी नहीं है बल्कि पवित्र पुस्तक तथा हदीसो-सुन्नत में पूर्ण रूप से इसकी निन्दा भी करता है तथा इसे समाजिक न्याय के विरुद्ध समझता है। यद्यपि इस्लाम में प्रचलित राजनीतिक कार्यक्रम विचारधारा तथा उसकीशासन पद्धति से अपरिचित कुछ टेढ़ी समझवाले लोगों ने अपने भाषणों तथा अपने आलेखों में यह साबित करने की कोशिश की है और अब भी इस शर्मनाक काम में लगे हुए हैं कि इस्लाम अथाह एवं असंख्य साम्राज्यवाद तथा पूँजीवाद का समर्थक है और अपनी इस गलतफहमी के कारण इस वर्ग के लोगों ने इस्लाम के प्रकाशमय चेहरे को छुपा दिया है तथा इस्लाम-विरोधी और स्वार्थी वर्ग के लोगों को यह अवसर प्रदान कर दिया है कि वह इस्लाम पर आक्रमण करें और इसे अमरीका तथा ब्रिटेन जैसे पश्चिम के अन्य लुटेरे देशों के समान पश्चिमी पूँजिवाद और साम्राज्यवाद का नाम दें। वह लोग इस्लाम के विषय में ज्ञान रखने वाले विशेषज्ञों से सम्पर्क किये बिना इन्ही लोगों की बात विश्वास करते हुये मूर्खता अथवा अपने स्वार्थ की सुरक्षा के लिये इस्लाम का विरोध कर रहे हैं।

इस्लाम साम्यवाद (Communism) मार्क्सवाद तथा लेनिनवाद के समान भी नहीं है जो व्यक्तिगत स्वामित्व का विरोधी और हर चीज़ में समान बटवारे का समर्थक है हालाँकि इस विचारधार और इसके पालन में शुरू से ही मतभेद दिखाई देता है। ये लोग यहाँ तक कि औरत और समानलिंग के बीच अनैतिक शरिरिक संबंध (Homo sexuality) में भी बटवारा और भागीदारी के समर्थक हैं वास्तव में इस्लाम एक संतुलित पद्धति है जो स्वामित्व के अधिकार को स्वीकार तथा उसका सम्मान करती है। परन्तु स्वामित्व की स्थापना के कारण तथा उसके प्रयोग में एक निश्चित सीमा का समर्थक हैं, कि यदि उसका सुनिश्चित ढ़ंग से पालन किया जाय तो स्वस्थ प्रशासन के पहिए चलने लगेंगे और सामाजिक न्याय, जो एक सुरक्षित शासन पद्धति के लिए अत्यंत आवश्यक है पूर्णरूप से स्थापित हो जाएगा। इस क्षेत्र में भी एक गिरोह अपनी टेढ़ी सूझबूझ तथा इस्लाम व उसकी स्वस्थ आर्थिक नीति से अनभिज्ञता की बुनियाद पर पहले गिरोह के मुकाबले में आ गया है। और उसने कभी-कभी कुछ कुर्आनी आयात तथा नहेजुल-बलाग़ा के वाक्यों का सहारा लेकर इस्लाम को मार्क्स आदि की गलत तथा भटकी हुई विचारधारा सा बनाकर पेश किया कुरान-मजीद की तमाम आयात तथा नेहलुल-बलाग़ा के

अन्य पूरक वाक्यों को जानबूझकर छोड़ दिया और अपनी मनमानी करते हुए तथा अपनी सीमित एवं अपूर्ण बुद्धि पर भरोसा करके इस्लाम के विरोध पर कमरबस्ता हो गया है। और इस गिरोह से संबंध रखने वाले लोग साम्यवादी विचारधाराओं की पैरवी में उस भयानक नास्तिकता का समर्थन कर रहे हैं जिसने सभी मानव आधारों को पीछे ढ़केल दिया है और मुट्ठीभर लोगों पर आश्रित एक पार्टी तमाम इंसानों के साथ जानवरों जैसा व्यवहार कर रही है।

पार्लियामेण्ट, निरीक्षण समिति, मंत्रिमंडल के सदस्यगण, राष्ट्रपति तथा सर्वोच्च न्यायायिक समिति से मेरी वसीयत यह है कि खुदा-वन्दे-आलम के आगे सर झुकाए रखिये और अत्याचारी तथा लुटेरे पूँजिपति ब्लाक या नास्तिक साम्यवादी ब्लाक दोनों के खोखले प्रापगंडों से प्रभावित न होइये। इस्लामी कानून के अंतर्गत वैध पूँजी तथा स्वामित्व के हक का सम्मान कीजिए तथा जनता में विश्वास पैदा कीजिये ताकि रचनात्मक गतिविधियाँ तथा पूँजी की चाल तेज हो जाय और इस तरह देश तथा सरकार को आत्मनिर्भरता तथा छोटे-बड़े उद्योग धन्धों से मालामाल कर दीजिए।

मैं जायज़ पैसा रखने वाले धनी वर्ग के लोगों से वसीयत करता हूँ कि अपनी वैध सम्पत्ति का इस्तेमाल कीजिए तथा खेतों, देहातों व कल कारखानों में रचनात्मक कार्यों के लिए उठ खड़े होइए क्योंकि वह स्वयं एक मूल्यवान एवं महान इबादत है। मैं गरीब एवं दलितवर्ग की खुशहाली के लिए सबसे वसीयत करता हूँ क्योंकि तुम्हारी सांसारिक एवं पारलौकिक भलाई समाज के उन कमज़ोरों एवं दलितों की भलाई के लिए किए जाने वाले प्रयत्नों में निहित है जो पूंजिवादी पद्धति और तानाशाही के लंबे इतिहास में कठिनाई का जीवन व्यतीत करते रहे हैं। और कितनी अच्छी बात है कि धनीवर्ग के लोग स्वेच्छा से छप्पर और झोपड़ियों में रहने वालों के लिए मकान और अन्य सुविधाओं का प्रबंध कर दे। और यह बात इन्साफ से बहुत दूर है कि एक बेघर और एक बड़ी-बड़ी ईमारतों का मालिक हो।

(प) उन ज्ञानियों तथा ढ़ोगी ज्ञानियों से; जो विभिन्न उद्देश्यों के अंतर्गत इस्लामी गणतंत्र तथा उसके नवस्थापित संस्थानों का विरोध करते हैं, हर समय इसके सर्वनाश की चेष्टा करते हैं, राजनीतिक खिलाड़ियों तथा षड़यंत्रकारी विरोधियों की सहायता कर रहे हैं और कभी-कभी - जैसा कि कहा जाता है- इसी उद्देश्य के लिए खुदा से लापरवाह पूँजिपतियों से भारी भुगतान प्राप्त करके इन विरोधियों की बढ़चढ़कर सहायता करते हैं, मेरी वसीयत यह है कि तुम्हें इन बुरी हरकतों से अभी तक कोई लाभ नहीं पहुँचा है और मेरे ख्याल में इसके बाद भी तुम कुछ प्राप्त न कर सकोगे। अतः उचित यही है कि यदि तुमने यह कदम इस दुनियाँ के लिए उठाए हैं तो याद रखो कि खुदा तुम्हें तुम्हारे अशुभ उद्देश्य में सफल न होने देगा। जब तक पश्चाताप का दरवाज़ा खुला हुआ है खुदा से क्षमा माँगकर अत्याचार सहन करने वाली जनता के साथी बन जाओ और इस्लामी गणतंत्र, जो जनता की कुर्बानियों का परिणाम है की भरपूर सहायता करो क्योंकि लोक परलोक का हित इसी में निहित है। हालाँकि मैं यह नहीं समझता कि तुम्हें पश्चाताप करने की क्षमता प्राप्त हो सकेगी।

लेकिन वो लोग जो विभिन्न लोगों या गिरोहों से जानबूझकर या अनजाने में ऐसी गल्तियाँ हो जाने की वजह से जो इस्लामी आदेश के विरुद्ध हैं, पूरी तरह से इस्लामी गणतंत्र और उसकी हुकूमत के भी कट्टर विरोधी हो गए हैं और खुदा की खुशी के लिए इस हुकूमत को मिटाने की चेष्टा कर रहे हैं और जिनके ख्याल में यह गणतन्त्र पिछली शाही शासन पद्धति से भी ज़्यादा खराब है या उसी के समान है, उनसे मेरी वसीयत यह है कि वो सदभाव के साथ एकांत में सोच विचार करे और इंसाफ के साथ इस हुकूमत की पिछली हुकूमत से तुलना करे और इस बात को भी ध्यान में रखे कि दुनियाँ में जन्म लेने वाली क्रान्ति में गड़बड़ी की भूलचूक और अवसरवाद से बचना संभव नहीं है। आप अगर इस बात पर ध्यान देंगे और इस्लामी गणतंत्र की कठिनाइयों को ध्यान में रखेंगे, उदाहरण के रूप इसके विरुद्ध किए जाने वाले षड़यंत्र, झूठे प्रोपगंडे, देश के अन्दर और सीमा के उस पार से सशत्र आक्रमण जनता को इस्लाम तथा इस्लामी हुकूमत से नाराज़ करने के उद्देश्य से सभी सरकारी दफ्तरों में इस्लाम विरोधी असमाजिक तत्वों की घुसपैठ अधिकतर अधिकारियों के अनुभव की कमी विरोधियों की ओर से फैलाई जाने वाली झूठी अफ़वाहें इस्लामी न्यायपद्धति में निपुण न्यायाधीशों की असाधारण कमी, कमरतोड़ आर्थिक कठिनाइयाँ, करोड़ों सरकारी कर्मचारियों की सुधार संबंधी समस्याएं, सद्भावी नेक, निपुण एवं अनुभवी लोगों की कमी और इस प्रकार की दूसरी असंख्य कठिनाइयाँ। विदित रहे कि जब तक इंसान स्वयं कठिनाइयों के मैदान में न उतरे, उन्हें नहीं समझ सकता। दूसरी तरफ वो साम्राज्यवादी बड़े-बड़े पूँजिपति हैं जो सूदखोरी, मुनाफाख़ोरी, विदेशी-मुद्रा के निष्कासन, आसमान को छूने वाली महँगाई, तस्करी तथा जमाख़ोरी के द्वारा समाज के गरीब वर्ग के लोगों पर आर्थिक दबाव डालकर उनको मिटाने पर तुले हुए हैं और समाज को तबाही की ओर ले जा रहे हैं। यही लोग आप हज़रात के पास हुकूमत की शिकायत करने और आप को धोखा देने आते हैं और कभी-कभी आप लोगों को अधिक प्रभावित करने, और अपने को पक्का मुसलमान दिखाने के लिए खुम्स के नाम से कुछ रक़म भी आपके हवाले कर देते हैं और मगरमच्छ के आँसू बहाकर आप को गुस्सा दिलाते हैं और इस्लामी गणतंत्र के विरोध के लिए आपको उत्तेजित करते हैं। इनमें से बहुत से ऐसे हैं जो अवैध तरीकों से फ़ायदा उठाकर जनता का खून चूस रहे हैं और देश की आर्थिक दशा को असफलता की ओर घसीट रहे हैं। मैं विनम्रता के साथ तथा भाईचारे के रूप में नसीहत करता हूँ कि प्रतिष्ठित एवं सम्मानित हज़रात इस प्रकार की झूठी अफवाहों से प्रभावित न हों और खुदा के लिए इस्लाम की सुरक्षा की ख़ातिर इस गणतंत्र को शक्तिशाली बनाएँ और अच्छी तरह समझ लें कि यदि ये इस्लामी गणतंत्र असफल हो गया तो इसके स्थान पर इमामे ज़माना (अलै॰) की मनपसंद अथवा आप लोगों की आज्ञाकारी इस्लामी हुकूमत स्थापित नहीं हो जाएगी बल्कि महाशक्तियों के दोनों ब्लाकों में से किसी एक ब्लाक की मनपसंद शासनपद्धति सत्तारूढ़ हो जाएगी। और विश्व के कमज़ोर एवं दलित लोग जो इस्लाम और इस्लामी हुकूमत से आशा लगाए हैं, निराश हो जाएँगे। और इस्लाम सदैव सदैव के लिए एकांतमय हो जाएगा। और आप लोग एक दिन अपने किए पर पछताएँगे मगर उस समय तक देर हो चुकी होगी, मामला

हाथ से निकल चुका होगा और आपके पछतावे से कुछ हासिल न होगा। और अगर आप लोग यह उम्मीद रखते हैं कि तमाम काम एक ही रात में इस्लाम और खुदा-वन्दे-आलम के आदेशानुसार परिवर्तित हो जाएँ तो यह एक बहुत बड़ी भूल है। पूरे मानव-इतिहास में न इस प्रकार का चमत्कार दिखाई पड़ा है और न होगा। और जिस समय ईशा-अल्लाह संपूर्ण धारक इमामे ज़माना (अलै॰) प्रकट होंगे उस समय भी यह मत सोचिए कि कोई अद्भुत चमत्कार होगा और एक दिन में पूरे विश्व का सुधार हो जाएगा। बल्कि असीम प्रयत्नों तथा लगातार कुर्बानियों के द्वारा हिंसक एवं अत्याचारी लोग कुचले जाएँगे और किनारे लगेंगे। और यदि कुछ भटके हुए अनपढ़ लोगों की तरह से आपकी भी यही विचारधारा है कि हज़रते इमामे-ज़माना (अलै॰) के प्रकट होने के लिए नास्तिकता एवं अत्याचार फैलाने की चेष्टा करनी चाहिए ताकि दुनियाँ के कोने-कोने तक अत्याचार फैल जाय तथा इमाम के ज़हूर के लिए मार्ग-प्रशस्त हो जाय, तो फिर अल्लाह ही मालिक है। इन्ना-लिल्लाह-व-इन्ना इलैहे-राजेऊन।

(फ) तमाम मुसलमानों तथा विश्व के कमज़ोर एवं दलित लोगों से मेरी वसीयत यह है कि आप इस प्रतीक्षा में न बैठे रहें कि आपके देश के शासक और अधिकारीगण और विदेशी शक्तियाँ आएँ और आपकी सेवा में स्वाधीनता और स्वतंत्रता के उपहार भेंट करे। हमने और आपने अपनी आँखों से स्वयं देख लिया कि कम से कम इस वर्तमान शताब्दी में धीरे-धीरे सभी इस्लामी देशों बल्कि विश्व के सभी छोटे-छोटे देशों में अंतर्राष्ट्रीय लुटेरों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। या तथ्य पर आधारित इतिहास ने हमें बताया है कि इन देशों पर सत्तारूढ़ हुकूमतों ने कभी-कभी अपने जनता की स्वतंत्रता व स्वाधीनता तथा उसकी प्रगति व चिन्ता की है और न कर रही है। बल्कि लगभग सभी हुकूमतें या तो स्वयं ही अपनी जनता के लिए अन्याय व अत्याचार के द्वारा घुटन की जिन्दगी का प्रबंध करती रही है। और अपने हर काम में केवल व्यक्तिगत या वर्गीगत हितों को ही ध्यान में रखा है। या फिर मालदार और खुशहाल वर्ग के लोगों को और ज़्यादा ऐशो-आराम पहुँचाने की चिन्ता रही है। झोपड़ी का जीवन व्यतीत करने वाले गरीब एवं मज़लूम वर्ग के लोग जीवन की तमाम सुविधाओं यहाँ तक कि रोटी और पानी जैसी-चीज़ों तथा जिन्दा रहने की ताक़त से भी वंचित रहे हैं। इन हुकूमतों ने इन गरीब और असहाय लोगों को खुशहाल और विलासिता में डूबे हुए लोगों के हित के लिए प्रयोग किया है। और या फिर ये हुकूमतें बड़ी ताक़तों की कठपुलती रही हैं जिन्होंने पूरी शक्ति के साथ अपने देशों और अपनी जनता को विदेशों से संबंधित बनाने की कोशिश की है। और अनेक चालबाज़ियों से अपने देशों को पूरब या पश्चिम की मण्डी बनाकर उनके हितों की रक्षा की है। तथा लोगों को केवल खाने व खर्च करने का आदी बना दिया है। और आज भी इसी योजना के अनुसार काम चल रहा है।

ऐ संसार के कमज़ोर लोगो! ऐ इस्लामी देशो! और ऐ दुनियाँ के मुसलमानो! उठो! और अपना अधिकार वापस लेने के लिए भर्सक प्रयत्न करो। बड़ी ताक़तों और उनके

एजेण्टों के प्रोपगण्डों व उनकी घनगरज और हुड़कियों से मत डरो। अपराधी शासक जो तुम्हारी गाढ़ी कमाई तुम्हारे और इस्लाम के दुश्मनों के हवाले कर रहे हैं उन्हें अपने देश से बाहर निकाल दो। तुम स्वयं उत्तरदायी तथा देशसेवा की भावना से परिपूर्ण वर्ग के साथ मिलकर देश की बागडोर अपने हाथ में संभाल लो। और सभी लोग इस्लाम के सम्मानित झण्डे के नीचे एकत्रित होकर इस्लाम एवं विश्व के दलित वर्ग के दुश्मनों के मुकाबले अपनी सुरक्षा के लिए उठ खड़े हो। और स्वाधीन व स्वतंत्र गणतंत्रों के रूप में एक इस्लामी हुकूमत स्थापित करने के लिए आगे बढ़ो। क्योंकि ऐसी अवस्था में तुम विश्व के सभी अत्याचारियों को हरा दोगे। तथा तमाम दलित लोगों को भूमण्डल की विरासत तथा नेतृत्व की पदवी दिला दोगे। उस दिन की मनोकामना के साथ जिसका खुदा-वन्दे आलम ने वचन दिया है।

(ब) इस वसीयत-नामे के आखिर में एक बार फिर ईरान की शरीफ़ और सम्मानित जनता से वसीयत करता हूँ कि दुनियाँ में उतना ही अधिक कठिनाइयों तकलीफ़ों, कुर्बानियों तथा परेशानियों का बोझ उठाना पड़ता है जितना ऊँचा, महान और मूल्यवान उद्देश्य होता है। आप जैसी मुजाहिद और शरीफ़ कौम ने जिस चीज़ के लिए क्रान्ति को जन्म दिया है और जिसकी तरफ यह बढ़ रही है, और जिसकी राह में अपनी जान-ओ-माल न्यौछावर किया है और कर रहे हैं वह अत्यन्त महान एवं मूल्यवान उद्देश्य है। यह वो उद्देश्य है जिसे सृष्टि के आरंभ से सामने रखा गया है। और इस लोक के बाद परलोक तक के लिए मानव जगत के समाने पेश किया जाता रहेगा। और वो लक्ष्य "मकतबे-उलूहियत" (एकेश्वरवाद) अपने विस्तृत भाव में तथा नज़रिया-ए-तौहीद अपने सर्वोच्च पहलुओं के साथ है, जो सृष्टि की बुनियाद और अस्तित्व के क्षेत्र में गैब व शहद की तमाम श्रेणियों में सृष्टि का लक्ष्य है। और वे लक्ष्य अपने तमाम भावों के साथ हज़रत मुहम्मद (सल॰) के मकतब में मौजूद है। ईश्वर के तमाम दूतों तथा औलिया-कराम की कोशिश इसी लक्ष्य को कार्यान्वित करना था। इसके बिना संपूर्ण कमाल और असीम जलाल व जमाल (खुदा वन्दे करीम) तक पहुँचना संभव नहीं है। यही वो चीज़ है जिसने धरती के सपूतों को फरिश्तों और उनसे श्रेष्ठ मखलूकात पर भी श्रेष्ठता प्रदान की है। और इस मार्ग पर चलकर मानव को जो कुछ प्राप्त होता है वह पूरे ब्राह्मण की प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष मखलूक में से किसी को भी प्राप्त नहीं होता।

ऐ मुजाहिदो! तुम उस झण्डे के नीचे आगे बढ़ रहे हो जो संपूर्ण भौतिक एवं नैतिक दुनियाँ पर लहरा है। तुम इसको समझ सको या न समझ सको, तुम उस रास्ते पर चल रहे हो जो तमाम अंबिया (अलै॰) का एकमात्र रास्ता है और सादते-मुतलक़ का एकमात्र साधन है। यही वह भावना है जिसकी राह में तमाम औलिया शहादत को गले लगाते हैं और खून में डूबी हुई लाल मौत को शहद से ज़्यादा मीठा समझते हैं। और आपके जवान रणभूमि में इसी का एक घूँट पीकर जोश में आ गए हैं। और उनकी माँ बहनों तथा बाप भाइयों में यही भावना दृष्टिगोचर है। और हमें सच्चे अर्थों में यह करने का अधिकार है कि

یالیتنا کنا معکم فنفوز فوزا عظیما

मुबारक हो उन लोगों को वो ठंडी हवा के झोंके और वो मन को मोह लेने वाला नज़ारा। और यह भी याद रखना चाहिए कि इस जलवे का एक हिस्सा लहलहाते हुए खेतों, कठिन मेहनत वाले कारखानों उद्योग केन्द्रों तथा आविष्कारिक संस्थानों में और जनता के बीच, बाजारों, सड़कों, देहातों और उन तमाम लोगों में दिखाई दे रहा है जो इस्लाम, इस्लामी गणतंत्र व देश की उन्नति तथा आत्म निर्भरता के लिए सेवा कर रहे हैं। और जब तक समाज में सहयोग तथा एहसास-ए-ज़िम्मेदारी की यह भावना जागती रहेगी इन्शा-अल्लाह यह प्यारा देश भी हर प्रकार के नुक़सान से सुरक्षित रहेगा। अल्लाह का शुक्र है कि धार्मिक शिक्षा केन्द्रों, युनिवर्सिटियों तथा उच्च शिक्षा संस्थानों के जवान इस दैवी तथा इलाही तराने का आनंद ले रहे हैं। और यह सभी संस्थान संपूर्ण रूप से उन्हीं के हाथों में हैं। और इन्शा अल्लाह तबाही फैलाने वाले और सच्ची राह से हटे हुए लोगों के हाथ उन तक न पहुंच सकेंगे। उन तमाम लोगों से मेरी वसीयत यह है कि खुदा-वन्दे आलम की याद के सहारे आत्म-परिचय (मारफ़ते-नफ़्स), आत्मनिर्भरता तथा संपूर्ण स्वाधीनता व स्वतंत्रता की ओर आगे बढ़े। निस्संदेह खुदा आप लोगों के साथ है। अगर आप लोग खुदा के सेवक हैं और इस्लामी देश की उन्नति व प्रगति के लिए सहयोग की भावना को आगे बढ़ाते रहें। और मैं जनता में जिस जागृति, बुद्धिमानी एहसास-ए-जिम्मेदारी, त्याग, बलिदान तथा हक़ की राह में जिस ठोस इरादा-और स्थिरता को देख रहा हूँ उसको ध्यान में रखते हुए यह उम्मीद करता हूँ कि अल्लाह की कृपा से ये तमाम विशेषताएँ देश की आगामी संतानों में भी पैदा हो जाएँगी और एक बाद आने वाली दूसरी नस्ल के द्वारा इसमें बढ़ौतरी होती रहेगी। इस आशा के साथ मैं संतुष्ट हृदय, संपूर्ण इत्मिनानो विश्वास, के साथ, प्रसन्नचित और दिल में खुदा-वन्दे आलम की कृपा की उम्मीद के साथ आप बहन भाइयों से विदा होकर परलोक की ओर सफर कर रहा हूँ। और आप लोगों की नेक दुआओं का सख़्त मुहताज हूँ। रहमान-ओ-रहीम से दुआ करता हूँ कि सेवा में कोताही और गलती के संबंध में क्षमा याचना को स्वीकार कर लें और मैं जनता से भी उम्मीद रखता हूँ कि वो गल्तियों कोताहियों के संबंध में मुझे माफ़ करे तथा अपने ठोस इरादे और अपनी भरपूर शक्ति के साथ आगे बढ़ती रहे और यह जान ले कि एक सेवक के चले जाने से जनता की लोहे की दीवार में दरार नहीं पड़ेगी क्योंकि मुझसे ज़्यादा श्रेष्ठ तथा महान सेवक सेवा के लिए मौजूद हैं। और अल्लाह इस कौम तथा दुनियाँ के मज़लूमों का संरक्षक है।

व अस्सलाम-व अलैकुम-अला-एबादुल्ला
- सिस सालेहीन व रहमतउल्लाहे
-व- बरकातो।
:- रूहुल्लाह-अल-मूसवी-अल खुमैनी।

ये वसीयतनाम मेरी मौत के बाद अहमद खुमैनी जनता के सामने पढ़ें। और आपत्ति के सूरत में राष्ट्रपति, या इस्लामी पार्लियामेण्ट के अध्यक्ष या सर्वोच्च न्यायाधीश इस

कठिनाई को सहन करे। और आपित्त की सूरत में निरीक्षण समिति के मनोनीत धर्म-ज्ञानियों में से कोई एक इस कठिनाई को स्वीकार करे।

रूहुल्ला-अल-सूलवी-अल खुमैनी

29 पृष्ठों पर आधारित वसीयतनामा और उसकी प्रस्तावना के संदर्भ में कुछ बातें बयान कर देता हूँ:-

(1) अभी जबकि मैं जीवित हूँ मुझसे ऐसी बातों या चीज़ों को संबंधित किया जा रहा है जिनमें कोई वास्तविकता नहीं है। और संभावना है कि मेरे बाद इसकी मोटाई एवं मात्रा में और वृद्वि हो अतः मैं यह कहे देता हूँ कि जिन चीज़ों को मेरी ओर या मुझसे संबंधित किया गया है या भविष्य में किया जाएगा उसकी वास्तविकता उसी समय प्रमाणित है जब वह चीज़ मेरी आवाज, मेरी लिखावट में (तहरीर) या मेरी हस्ताक्षरित हो, जिसको विशेषज्ञों ने प्रमाणित कर दिया हो या इस्लामी गणतंत्र के टेलीविज़न पर मैंने कुछ कहा हो।

(2) कुछ लोगों ने मेरी जिन्दगी में यह दावा किया है कि वो मेरा भाषण व बयान लिखा करते थे। इस दावे को मैं पूरी तरह रद्द करता हूँ। अभी तक मेरा कोई भाषण या बयान स्वयं मेरे अतिरिक्त किसी दूसरे ने नहीं लिखा है।

(3) यह सुना है कि कुछ लोगों ने दावा किया है कि मेरी पेरिस यात्रा का प्रबंध उनके द्वारा किया गया था। यह बिलकुल झूठ है। जब मुझे कुवैत से वापस कर दिया गया तो मैंने अहमद (खुमैनी) से सलाह करके पेरिस जाने का निश्चय किया। क्योंकि इस्लामी देशों के बारे में यह संभावना थी कि वो मुझे आपने यहां आने न देंगी क्योंकि वो शाह से प्रभावित थे। किन्तु पेरिस में इसकी शंका न थी।

(4) मैं आन्दोलन और क्रान्ति के दौरान बाज़ लोगों की धोखेबाज़ी और इस्लाम नुमाई के कारण उनका जिक्र और उनकी प्रशंसा की है जबकि मुझे बाद में यह एहसास हुआ कि मैंने उनके मकरो-फ़रेब से धोखा खाया है। वो सारी प्रशंसाएं उस समय थी जब वो अपने को इस्लामी गणतंत्र का विश्वासी तथा वफादार बताते थे। पहले की गई प्रशंसाओं से नाजाएज़ फायदा नहीं उठाना चाहिए और हर व्यक्ति के संबंध में कसौटी उसकी मौजूदा हालत है।

रूहुल्लाह-अल-मूसवी-अल-खुमैनी।

Printed by:- CLASSIC PRINTERS GHAZIABAD.